श्री सुविधिनाथ विधान

मंगल आशीर्वाद :

प.पू. सिद्धांत चक्रवर्ती क्षपकराज शिरोमणि

राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य

श्री विद्यानंद जी मुनिराज

लेखक :

आचार्य वसुनंदी मुनि

सम्पादक :

आर्यिका वर्धस्वनंदनी

कृति :
श्री सुविधिनाथ विधान

मंगल आशीर्वाद :
प.पू. क्षपकराज शिरोमणि सिद्धांत चक्रवर्ती श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज

लेखक :
आचार्य वसुनंदी मुनि

सम्पादक :
आर्यिका वर्धस्वनंदनी

संस्करण : द्वितीय

प्रतियाँ : 1000 (सन् 2022)

ISBN : 978-93-94199-

मूल्य : सदुपयोग

प्राप्ति स्थान :
निर्ग्रन्थ ग्रन्थमाला समिति
ई० 102 केशर गार्डन
सै० 48 नोएडा-201301
मो. 9971548889, 9867557668

मुद्रण व्यवस्था :
अलंकार प्रकाशन
3611, श्याम भवन, दरियागंज, दिल्ली-110002

पुरोवाक्

दर्शनेन जिनेन्द्राणां, पापसंघात कुंजरम्।
शतधा भेदमायाति, गिरिर्वज्रहतो यथा।

(षट्खंडागम, पुष्पदंत, 1, 9-9, 22)

जिनेन्द देवों के दर्शन से पाप संघात रूपी कुंजर के सौ टुकड़े उसी प्रकार हो जाते हैं जिस प्रकार वज्र के आघात से पर्वत के सौ टुकड़े हो जाते हैं।

पश्यन्ति जिनं भक्त्या, पूजयन्ति स्तुवन्ति ये।
ते दृश्याश्च पूज्याश्च, स्तुत्याश्च भुवनत्रये॥

(पद्मनंदि पंचविशतिका, 67)

जो जिनेन्द्र देव की भक्ति, पूजा और स्तुति करते हैं, वे लोक में दर्शनीय, पूजनीय और स्तवनीय होते हैं।

भारतीय संस्कृति के अंतर्गत गृहस्थ जीवन में आत्मज्ञान और आत्मशुद्धि के लिए अपने आराध्य, वीतराग-विज्ञानता के आदर्श अरिहंत, सिद्ध आचार्य, उपाध्याय, साधु-इन पाँच परमेष्ठियों की भक्ति और पूजा करता है।

जिस प्रकार बाँस का आश्रय कर नट ऊँचा चढ़ने में सफल हो जाता है उसी प्रकार भक्ति के मणिमय सोपानों के सहारे मनुष्य नव उन्नतावस्था प्राप्त करने में रत हो जाता है। धीरे-धीरे भक्ति में तन्मय हुआ जीव विषय-कषायों का परित्याग करता है, इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करता है जिससे शुभोपयोग में वृद्धि

होती है। भक्ति परमात्म भाव को आत्मप्रतिष्ठित करने की सूचना है, पापों के प्रक्षालन हेतु शुभ नीर है, मोहतम को भगाने हेतु प्रकाश की निर्मल किरण वा दीप के समान है। श्रावक के लिए जिनेन्द्र भक्ति, पूजन अत्यंत आवश्यक है।

ये जिनेन्द्रं न पश्यन्ति, पूजयन्ति स्तुवन्ति न।
निष्फलं जीवितं तेषां, धिक् च तेषां गृहाश्रमम्॥6-15॥

आचार्य श्री पद्मनंदी जी कहते हैं जो गृहस्थ होकर षडावश्यकों में परमावश्यक जिनेन्द्र दर्शन नहीं करते हैं, उनका जीवन निष्फल है और गृहस्थाश्रम धिक्कारने योग्य है।

श्रावक के जीवन में जिनपूजन भक्ति कितनी आवश्यक है यह तो आचार्य महाराज की इस गाथा से ही ज्ञात हो जाता है। आचार्य भगवन् श्री कुंदकुंद स्वामी ने भी कहा है कि जो श्रावक दान व पूजन नहीं करता, वह श्रावक, श्रावक कहलाने का अधिकारी नहीं है। अतः श्रावक अपनी दिनचर्या में जिनपूजा को आवश्यक रूप से रखे।

जिस प्रकार राफटिंग करने वाला लाइफ जैकेट पहनता है, और तैरना ना आते हुए भी नदी में नहीं डूबता, उसी प्रकार देव पूजन रूपी लाइफ जैकेट हाथ में रखने वाला संसार रूपी सागर में नहीं डूबता।

प्रस्तुत कृति **''श्री सुविधिनाथ विधान''** के अंतर्गत चार वलय हैं प्रथम वलय में चार अनंतचतुष्टय, द्वितीय वलय में अष्ट प्रातिहार्य, तृतीय वलय में 16 कारण भावना व चतुर्थ वलय में 32 उपदेश युक्त जिनेन्द्र के अर्घ हैं। परम पूज्य

आचार्य गुरुवर श्री वसुनंदी जी मुनिराज के द्वारा रचित इस विधान में 32 जिनोपदेश रूप अर्घ्य लिए गए हैं जो अन्य कहीं दृष्टिगोचर नहीं होते ।

इस विधान के मुद्रण, पाण्डुलिपि संशोधन में जिन-जिन महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है उन्हें सदैव पूज्य गुरुवर श्री का मंगलमय शुभाशीष। गुरुवर श्री का संयम पथ सदैव आलोकित रहे। शताधिक वर्षों तक यह वसुधा गुरुवर श्री के तप, ज्ञान, साधना से सुरभित रहे। परमपूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य गुरुवर श्री वसुनंदी जी मुनिराज के चरणों में सिद्ध-श्रुत-आचार्य भक्ति सहित कोटिशः नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु...।।

-आर्यिका वर्धस्वनंदिनी

(कालका जी, दिल्ली 2019)

अनुक्रमणिका

1. मंगलाष्टक 7
2. विधान की प्रारंभिक क्रियायें 9
3. अभिषेक पाठ (संस्कृत) 14
4. जलाभिषेक वा प्रक्षाल पाठ 19
5. श्री शांतिधारा 23
6. विनयपाठ 28
7. पूजन पीठिका 30
8. नवदेवता पूजन (आ० श्री वसुनंदी जी मुनि कृत) 35
9. श्री सिद्धभक्ति प्राकृत (आ० श्री वसुनंदी जी मुनि कृत) 39
10. श्री सुविधिनाथ विधान 41
11. समुच्चय महार्घ्य 63
12. शांतिपाठ (भाषा) 64
13. विसर्जन पाठ 66
14. श्री सुविधिनाथ जिनं चालीसा 66
15. श्री सुविधिनाथ भगवान की आरती 69
16. निर्वाणकाण्ड (भाषा) 70
17. श्री सुविधिनाथ जिन स्तवन 72
    (वृ. स्वयंभू स्तोत्र/आ०श्री समन्तभद्र स्वामी कृत)
18. श्री सुविधिनाथ भगवान का जीवन परिचय 75
19. परम्पराचार्य अर्घावली 77
20. प.पू. श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज की पूजन...79
21. क्षपक शिरोमणि आचार्य श्री विद्यानंद जी की आरती..... 83
22. मांडना..... 84

मङ्गलाष्टकम्

(शार्दूलविक्रीड़ितम् छन्द)

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्याः जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठकाः मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः,
पंञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥१॥

श्रीमन्नम्र - सुरासुरेन्द्र - मुकुट - प्रद्योत - रत्नप्रभा-
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥२॥

सम्यग्दर्शन - बोध - वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्री - नगराधिनाथ - जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥३॥

नाभेयादि - जिनाधिपास्त्रिभुवन, ख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर - प्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिः,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥४॥

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पञ्च ये,
ये चाष्टांग - महानिमित्त - कुशलायेऽष्टौ - वियच्चारिणः।
पंचज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धि-ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥५॥

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥६॥

ज्योतिर्व्यन्तर - भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्य-शाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥७॥

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संपादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥८॥

इत्थं श्रीजिन-मंगलाष्टकमिदं सौभाग्य - सम्पत्करम्,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैः धर्मार्थ-कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय-रहिता निर्वाण-लक्ष्मीरपि॥९॥

॥इति श्री मंगलाष्टकस्तोत्रम्॥

विधान की प्रारम्भिक क्रियाएँ

अमृतस्नान

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत-वर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(अंजुलि में जल लेकर शरीर पर छिड़कें)

तिलक मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम/यजमानस्य सर्वांगशुद्धि- हेतवे नव तिलकं करोम्यहम्॥

(1. शिखा 2. मस्तक 3. ग्रीवा 4. हृदय 5. दोनों भुजाएँ 6. पीठ 7. कान 8. नाभि 9. हाथ। (इन नौ स्थानों पर तिलक लगायें)।

दिग्बन्धन मन्त्र

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्वदिशः आगत-विघ्नान् निवारय-निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से पूर्व दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिण दिशःआगत विघ्नान् निवारय-निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से दक्षिण दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं पश्चिम दिशःआगत विघ्नान् निवारय- निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से पश्चिम दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तर दिशःआगत विघ्नान् निवारय- निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से उत्तर दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः सर्वदिशःआगत विघ्नान् निवारय- निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से सभी दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

परिचारक मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(सात बार पुष्प क्षेपण करें)

रक्षा-मन्त्र

ॐ ह्रूं क्ष्रूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्दि छिन्दि परमंत्रान् भिन्दि भिन्दि वाः वाः क्षः क्षः ह्रूं फट् स्वाहा।

(तीन बार पढ़कर पुष्प क्षेपण करें)

शान्ति मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष-कल्मषाय दिव्य-तेजो-मूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय, सर्व-रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्वपरकृच्छुद्रोपद्रव-नाशनाय सर्वक्षाम-डामर-विनाशनाय सर्वारिष्ट शान्तिकराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु स्वाहा।

(सात बार पढ़कर पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें)

भूमि शुद्धि मन्त्र

ॐ शोधयामि भूभागं, जिनधर्माभिरुत्सवे।
काल-धौतोज्ज्वल स्थूलं, कलशापूर्ण वारिणी॥

ॐ ह्रीं नमः सर्वज्ञाय सर्वलोकनाथाय धर्मतीर्थनाथाय श्रीशान्तिनाथाय परमपवित्रेभ्यः शुद्धेभ्यः नमः पवित्रजलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा।

पात्र शुद्धि मन्त्र

शोधये सर्वपात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नायं, करोमि सकलीक्रियाम्॥

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा पवित्रतरजलेन पात्रशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(पूजा के सभी बर्तन मंत्रित जल के छीटें लगाकर शुद्ध करें)

द्रव्यशुद्धि मन्त्र

ॐ ह्रीं अर्हं झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं इ्वीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ उ सा समस्ततीर्थपवित्रजलेन शुद्धपात्र-निक्षिप्त-पूजाद्रव्याणि शोधयामि स्वाहा।

(पूजा द्रव्य को मंत्रित जल से शुद्ध करें)

सकलीकरण

(अंगुलियों में पंच परमेष्ठी की स्थापना करना)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करतालाभ्यां नमः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करपृष्ठाभ्यां नमः।

अंगशुद्धि

(दोनों हाथों से अंग स्पर्श करें)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम शीर्ष रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा।

शरीर पर पुष्पक्षेपण करें।

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

वस्त्र पर पुष्पक्षेपण करें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।

पूजन द्रव्य पर पुष्पक्षेपण करें।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

स्थान निरीक्षण करें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम पूजा स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।

सर्वजगत की रक्षा के लिए जल सिंचन करें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वजगत् रक्ष रक्ष स्वाहा।

दाहिने हाथ में रक्षासूत्र बाँधें।

ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

यज्ञोपवीत धारण

ॐ नमः परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकरणायाहं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

नियम

सप्त व्यसनों का त्याग, अष्ट मूलगुणों को धारण करना।

जलशुद्धि

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म-तिगिंच्छकेसरि - पुण्डरीक - महापुण्डरीक - गंगासिन्धु - रोहिद्रोहितास्या - हरिद्धरिकान्ता - सीता - सीतोदा - नारी - नरकान्ता - सुवर्णरूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधि जलं सुवर्ण घटं प्रक्षिप्तं-

सर्वगन्धपुष्पाद्य - ममोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

(पीले सरसों अथवा लवंग से जल शुद्ध करना)

मंगल कलश में सुपाड़ी, हल्दी रखने का मन्त्र

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मंगलकलशे पुंगादिफलानि प्रभृति वस्तूनि प्रक्षिपामीति स्वाहा।

मंगल कलश के ऊपर श्रीफल रखने का मन्त्र

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

मंगल कलश स्थापना

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादि ब्रह्मणे मतेऽस्मिन् विधीयमाने कर्माणि वीरनिर्वाणसंवत्सरे ..... मासे ..... पक्षे .....तिथौ..... वासरे ..... प्रशस्तलग्ने नवरत्नगन्धपुष्पाक्षतबीजपूरादिशोभितं ..... कार्यस्य निर्विघ्नसम्पन्नार्थं मंगलकलशस्थापनं करोम्यहं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(मंडल के ईशान कोण में कलश स्थापित करें)

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं, सकललोकसुखाकरमुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलकं मुदा॥

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

माला शुद्धि

ॐ ह्रीं रत्नैः स्वर्णैः सूतैर्बीजैः रचिता जपमालिका सर्वजपेषु वाञ्छितानि प्रयच्छन्तु।

माला (जाप) को प्रासुक जल से धोकर थाली में स्वस्तिक बनाकर उसमें रखें और उक्त मंत्र को ७ बार पढ़कर पुष्प क्षेपण करें।

अभिषेक पाठ (संस्कृत)

(वसन्ततिलका)

श्रीमन्नताऽमर शिरस्तटरत्नदीप्तिः,
तोयाऽवभासि चरणाम्बुजयुग्ममीशम्।
अर्हन्तमुन्नत - पद - प्रदमाभिनम्य,
त्वन्मूर्तिषूद्यदभिषेक-विधिं करिष्ये॥१॥

अथ पौर्वाह्निक-देववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा - स्तव - वन्दना - समेतं श्री-पञ्च-महागुरु-भक्तिपूर्वकम् कायोत्सर्ग करोम्यहं।

(यह पढ़कर नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़ें)

(वसन्ततिलका)

याः कृत्रिमास्तदितराः प्रतिमाः जिनस्य,
संस्नापयन्ति पुरुहूतमुखादयस्ताः।
सद्भावलब्धिसमयादिनिमित्तयोगा,
तत्रैवमुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि॥२॥

अथ जिनाभिषेक प्रतिज्ञायां पुष्पांजलि क्षिपेत्।

(यह पढ़कर थाली में पुष्पांजलि छोड़कर अभिषेक की प्रतिज्ञा करें।)

(उपजाति)

श्री-पीठ-क्लृप्ते, विशदाक्षतौघैः, श्री-प्रस्तरे पूर्ण-शशाङ्क-कल्पे।
श्रीवर्तके चन्द्रमसीति वार्ता, सत्यापयन्तीं, श्रियमालिखामि॥३॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकारलेखनं करोमि।

(अनुष्टुप)

कनकादिनिभं कम्रं, पावनं पुण्यकारणम्।
स्थापयामि परं पीठं, जिन - स्नपनाय भक्तितः॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीपीठस्थापनं करोमि।

(वसन्ततिलका)

भृङ्गार-चामर-सुदर्पण-पीठ-कुम्भ,
तालध्वजा - तपनिवारक - भुषिताग्रे।
वर्धस्व नन्द जय पीठपदावलीभिः,
सिंहासने जिन! भवन्तमहंश्रयामि॥५॥

(अनुष्टुप)

वृषभादि - सुवीरान्तान्, जन्माप्तौ जिष्णुचर्चितान्।
स्थापयाम्यभिषेकाय, भक्त्या पीठे महोत्सवम्॥६॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ भगवन्! पाण्डुकशिलापीठे सिंहासने तिष्ठ-तिष्ठ।

(वसन्ततिलका)

श्रीतीर्थकृत् - स्नपनवर्यविधौ सुरेन्द्रः,
क्षीराऽब्धिवारिभिरपूरयदर्थ - कुम्भान्।
तांस्तादृशानिव विभाव्य यथाऽर्हणीयान्,
संस्थापये कुसुमचन्दनभूषिताग्रान्॥७॥

(अनुष्टुप)

शातकुम्भीय - कुम्भौघान्, श्रीराब्धेस्तोयपूरितान्।
स्थापयामि जिनस्नान - चन्दनादि - सुचर्चितान्॥८॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुःकोणेषु चतुःकलशस्थापनं करोमि।

(यह पढ़कर चार कोनों में कलश स्थापित करें)

(वसन्ततिलका)

आनन्द - निर्भर - सुर प्रमदादि - गानैः,
वादित्र - पूर - जय - शब्द - कल - प्रशस्तैः।
उद्गीयमान - जगतीपतिकीर्तिमेनां,
पीठ-स्थलीं वसु-विधाऽर्चनयोल्लसामि॥९॥

ॐ ह्रीं स्नपन-पीठ-स्थिताय जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

कर्म - प्रबन्ध - निगडैरपि हीनताप्तं,
ज्ञात्वापि भक्तिवशतः परमादिदेवम्।
त्वां स्वीयकल्मषगणोन्मथनाय देव !
शुद्धोदकैरभिनयामिनयार्थकस्व॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनेन्द्रमाभिषेचयामि स्वाहा।

(अनुष्टुप)

तीर्थोत्तम - भवैनीरैः क्षीर - वारिभि - रूपकैः।
स्नपयामि सुजन्मान्तान्, जिनान् सर्वार्थसिद्धिदान्॥११॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

(यह पढ़ते हुए कलश से धारा प्रतिमाजी पर छोड़ें)

(मालिनी)

सकलभुवननाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्द्रै-
रभिषवविधिमाप्तं स्नातकं स्नापयामः।
यदभिषवन-वारां बिन्दुरेकोऽपि नृणां,
प्रभवति हि विधातुं भुक्तिसन्मुक्तिलक्ष्मीम्॥१२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं ह्रः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति बृहच्छान्तिमन्त्रेणाभिषेकं करोमि।

(यह पढ़कर चारों कोनों में रखे हुए चार कलशों से अभिषेक करें।)

(वसन्ततिलका)

पानीय - चन्दन - सदक्षत - पुष्पपुञ्जैः
नैवेद्य - दीपक - सुधूप - फलव्रजेन।
कर्माष्टक-क्रथन-वीर-मनन्त-शक्तिं,
संपूजयामि सहसा महसां निधानम्॥१३॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

हे तीर्थपा! निजयशोधवलीकृताशा,
सिद्धौषधाश्च भवदुःखमहागदानाम्।
सद्भव्यहृज्जनितपङ्ककबन्धकल्पाः,
यूयं जिनाः सततशान्तिकरा भवन्तु॥१४॥

(यह पढ़कर शान्ति के लिए पुष्पांजलि छोड़ें)

(वसन्ततिलका)

नत्वा मुहूर्निज - करै - रमृतोपमेयैः,
स्वच्छैर्जिनेन्द्र! तव चन्द्रकराऽवदातैः।
शुद्धांऽशुकेन विमलेन नितान्तरम्ये,
देहे स्थितान्जलकणान्परिमार्जयामि॥१५॥

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्बपरिमार्जनं करोमि।

(यह पढ़कर शुद्ध और स्वच्छ वस्त्र से प्रतिमाजी को पोंछें)

(वसन्ततिलका)

स्नानं विधाय भवतोऽष्टसहस्रनाम्ना-
मुच्चारणेन मनसो वचनो विशुद्धिम्।
जिघृक्षुरिष्टिमिन ! तेऽष्टतयीं विधातुं,
सिंहासने विधिवदत्र निवेशयामि॥१६॥

ॐ ह्रीं श्री सिंहासनपीठे जिनबिम्बं स्थापयामि।

(अनुष्टुप)

जलगन्धाऽक्षतैः पुष्पैश्चरुसुदीपसुधूपकैः,
फलैरर्घ्यैर्जिनमर्चे, जन्म-दुःखा-पहानये॥१७॥

ॐ ह्रीं श्रीपीठस्थिताय जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

नत्वा परीत्य निजनेत्रललाटयोश्च,
व्याप्तं क्षणेन हरतादधसञ्चयं मे।
शुद्धोदकं जिनपते तव पादयोगाद्,
भूयाद् भवाऽतपहरं धृतमादरेण॥१८॥

(शार्दूलविक्रीडित)

मुक्तिश्रीवनिताकरोदकमिदं, पुण्याङ्कुरोत्पादकम्;
नागेन्द्र-त्रिदशेन्द्र-चक्र-पदवी, राज्याभिषेकोदकम्।
सम्यग्ज्ञान-चरित्र-दर्शन-लता, संवृद्धि-सम्पादकम्,
कीर्तिश्रीजयसाधकं तव जिन! स्नानस्य गन्धोदकम्॥१९॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनगन्धोदकं स्वललाटे धारयामि।

(शिखरिणी)

इमे नेत्रे जाते, सुकृत-जलसिक्ते सफलिते,
ममेदं मानुष्यं, कृति-जनगणाऽदेयमभवत्।
मदीयाद् भल्लाटा, दशुभवसुकर्माऽटनमभूत्,
सदेदृक् पुण्यार्हन्! मम भवतु ते पूजनविधौ॥२०॥

(यह पढ़कर पुष्पांजलि छोड़ें)

जलाभिषेक वा प्रक्षाल-पाठ

(प्रक्षाल करते समय पढ़ना चाहिये।)

दोहा

जय जय भगवंते सदा, मंगल मूल महान।
वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, नमौं जोरि जुगपान॥

(ढाल– मंगल की)
(छंद–अडिल्ल और गीता)

श्री जिन जगमें ऐसो को बुधवंत जू।
जो तुम गुण वरननि करि पावै अंत जू॥
इंद्रादिक सुर चार ज्ञानधारी मुनी।
कहि न सकै तुम गुणगण हे त्रिभुवनधनी॥

अनुपम अमित तुम गुणनि-वारिधि, ज्यों अलोकाकाश है।
किमि धरैं हम उर कोष में सो अकथ-गुण-मुणि राश है॥
पै निज प्रयोजन सिद्धि की तुम नाम में ही शक्ति है।
यह चित्त में सरधान यातैं नाम ही में भक्ति है॥1॥

ज्ञानावरणी दर्शन, आवरणी भने।
कर्म मोहनी अंतराय चारों हने॥
लोकालोक विलोक्यो केवलज्ञान में।
इंद्रादिक के मुकुट नये सुरथान में॥

तब इन्द्र जान्यो अवधितैं, उठि सुरन-युत वंदत भयो।
तुम पुन्यको प्रेरयो हरी ह्वै मुदित धनपतिसों कह्यो॥
अब वेगि जाय रचौ समवसृति सफल सुरपदको करो।
साक्षात् श्री अरहंत के दर्शन करौ कल्मष हरो॥2॥

ऐसे वचन सुने सुरपति के धनपति।
चल आयो तत्काल मोद धारै अती॥
वीतराग छवि देखि शब्द जय जय चयो।
दे प्रदच्छिना बार बार वंदत भयो॥

अति भक्ति-भीनो नम्र-चित ह्वै, समवशरण रच्यौ सही।
ताकी अनूपम शुभ गतीको, कहन समरथ कोउ नहीं॥
प्राकार तोरण सभामंडप कनक मणिमय छाजहीं।
नग-जड़ित गंधकुटी मनोहर मध्यभाग विराजहीं॥3॥

सिंहासन तामध्य बन्यौ अद्भुत दिपै।
तापर वारिज रच्यौ प्रभा दिनकर छिपै॥
तीन छत्र सिर शोभित चौसठ चमरजी।
महा भक्तियुत ढोरत हैं तहां अमरजी॥

प्रभु तरन तारन कमल ऊपर, अन्तरीक्ष विराजिया।
यही वीतराग दशा प्रतच्छ विलोकि भविजन सुख लिया।
मुनि आदि द्वादश सभा के भविजीव मस्तक नाय के।
बहुभांति बारंबार पूजैं, नमैं गुणगण गाय के॥4॥

परमौदारिक दिव्य देह पावन सही।
क्षुधा तृषा चिंता भय गद दूषण नहीं॥

जन्म जरामृति अरति शोक विस्मय नसे।
राग रोष निद्रा मद मोह सबै खसे॥

श्रमबिना श्रमजलरहित पावन अमल ज्योति-स्वरूपजी।
शरणागतनि की अशुचिता हरि, करत विमल अनूपजी॥
ऐसे प्रभू की शांतिमुद्रा को न्हवन जलतैं करें।
'जस' भक्तिवश मन उक्ति तैं हम भानु ढिग दीपक धरें॥5॥

तुम तो सहज पवित्र यही निश्चय भयो।
तुम पवित्रता हेत नहीं मज्जन ठयो॥
मैं मलीन रागादिक मलतैं ह्वै रह्यो।
महा मलिन तन में वसु-विधि-वश दुख सह्यो॥

बीत्यो अनंतो काल यह मेरी अशुचिता ना गई।
तिस अशुचिता-हर एक तुम ही, भरहु बांछा चित ठई॥
अब अष्टकर्म विनाश सब मल रोष-रागादिक हरो।
तनरूप कारा-गेहतैं उद्धार शिव वासा करो॥6॥

मैं जानत तुम अष्टकर्म हरि शिव गये।
आवागमन विमुक्त राग-वर्जित भये॥
पर तथापि मेरो मनोरथ पूरत सही।
नय-प्रमानतैं जानि महा साता लही॥

पापाचरण तजि न्हवन करता चित्त में ऐसे धरूं।
साक्षात श्री अरहंत का मानों न्हवन परसन करूं॥
ऐसे विमल परिणाम होते अशुभ नसि शुभबंध तैं।
विधि अशुभ नसि शुभबंधतैं ह्वै शर्म सब विधि तासतैं॥7॥

पावन मेरे नयन, भये तुम दरसतैं।
पावन पानि भये तुम चरननि परसतैं।।
पावन मन ह्वै गयो तिहारे ध्यानतैं।
पावन रसना मानी, तुम गुण गानतैं।।

पावन भई परजाय मेरी, भयो मैं पूरण-धनी।
मैं शक्तिपूर्वक भक्ति कीनी, पूर्णभक्ति नहीं बनी।।
धन धन्य ते बड़भागि भवि तिन नींव शिव-घर की धरी।
वर क्षीरसागर आदि जल मणिकुंभ भर भक्ती करी।।8।।

विघन-सघन-वन-दाहन-दहन प्रचंड हो।
मोह-महा-तम-दलन प्रबल मारतण्ड हो।।
ब्रह्मा विष्णु महेश, आदि संज्ञा धरो।
जग-विजयी जमराज नाश ताको करो।।

आनंद-कारण दुख-निवारण, परम-मंगल-मय सही।
मोसो पतित नहिं और तुमसो, पतित-तार सुन्यो नहीं।।
चिंतामणी पारस कल्पतरु, एक भव सुखकार ही।
तुम भक्ति-नवका जे चढ़े, ते भये भवदधि-पार ही।।9।।

दोहा

तुम भवदधितैं तरि गये, भये निकल अविकार।
तारतम्य इस भक्तिको, हमैं उतारो पार।।10।।

।।इति हरजसराय कृत अभिषेक पाठ।।

श्री शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः **श्री वीतरागाय नमः**

ॐ णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

चत्तारि मंगलं-अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष-कल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्वक्षाम-डामर-विनाशनाय सर्व ग्रहारिष्ट शांति कराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम/शांतिधारा कर्ता का नाम.... सर्वशान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ ह्रूं क्षूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षः क्षः ह्रूं फट् सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरिहंताणं ह्रौं सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद् विनाशनाय ह्रीं शान्तिनाथाय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सुरपुष्पवृष्टि- सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दिव्यध्वनिसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दिव्यधवनि-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय म्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय चामरोज्ज्वलसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय चामरोज्ज्वल- सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय र्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सिंहासनसत्प्रातिहार्य - मण्डिताय सिंहासन - सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय घ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय भामण्डलसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय भामण्डल-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय झ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दुन्दुभिसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दुन्दुभि-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय स्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय छत्रत्रयसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्य- शोभनपदप्रदाय ख्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय प्रातिहार्यष्टसहिताय बीजाष्टमण्डन - मण्डिताय सर्वविघ्नशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठ बुद्धीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदाणुसारीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्ण सोदारणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहिय बुद्धाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दस पुव्वीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्त कुसलाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्ढि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्त तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्त तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महा तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर परक्कमाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणबंभयारीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पि सवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुर सवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायद्णाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो महदि महावीर वढ्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।

जस्संतियं धम्मपहं णियंच्छे, तस्संतयं वेणइयं पउं जे।
कायेण वाचा मणसा विणिच्चं, सक्कारएतं सिरपंच मेण।

तब भक्ति - प्रसादाद्लक्ष्मी - पुर - राज्य - गेह - पद - भ्रष्टोपद्रव - दारिद्रोद् भवोपद्रव - स्वचक्र - परचक्रोद्भवोपद्रव - प्रचण्ड - पवनानल जलोद्भवोपद्रव - शाकिनी - डाकिनी - भूत-पिशाच- कृतोपद्रव - दुर्भिक्षव्यापार - वृद्धिरहितोपद्रवाणां विनाशनं भवतु।

श्री शान्तिरस्तु। शिवमस्तु। जयोऽस्तु। नित्यमारोग्यमस्तु। श्रेष्ठी श्री. .....सर्वेषां पुष्टिरस्तु। सृष्टिरस्तु। समृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। सुखमस्तु। अभिवृद्धिरस्तु। कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। श्री सद्धर्म बलायुरा-रोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सम्पूर्णकल्याणं मंगलरूप-मोक्ष-पुरुषार्थश्च भवतु।

प्रध्वस्त-घातिकर्माणः केवलज्ञान-भास्कराः।
कुर्वन्तु जगतां शान्तिः वृषभाद्यः जिनेश्वराः॥

(उपजाति छन्द)

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्रसामान्य-तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्रः॥

।।इति शांतिधारा।।

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥१॥

अनन्त चतुष्टय के धनी, तुमही हो सिरताज।
मुक्ति वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥२॥

तिहुँ जग की पीड़ाहरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥३॥

हरता अघ अंधियार के, करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥४॥

धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप॥५॥

मैं वन्दों जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबन्ध के छेदने, और न कछु उपाव॥६॥

भविजन को भवकूपतैं, तुमही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण-भण्डार॥७॥

चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिवगैल॥८॥

तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरै, विष निरविषता थाय॥९॥

चक्री खगधर इन्द्रपद, मिलें आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥१०॥

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जलबिन मीन।
जन्म-जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥११॥

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१२॥

थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१३॥

राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग-कुटेव॥१४॥

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥१५॥

तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥

अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिन्धु में, खेव लगाओ पार॥१७॥

इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारि कै, कीजे आप समान॥१८॥

तुमरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा ! हा ! डूबो जात हौं, नेक निहार निकार॥१९॥

जो मैं कहहूँ और सौं, तो न मिटै उर भार।
मेरी तो तोसौं बनी, तातैं करौं पुकार॥२०॥

वन्दों पाँचों परमगुरु, सुर गुरु वन्दत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥२१॥

चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय॥२२॥

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान॥१॥
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हंत देव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वंदूँ स्वयमेव॥२॥
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वंदूँ मन वच काय॥३॥
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगल करो, हरो असाता कर्म॥४॥
या विधि मंगल से सदा, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भव सागर दृढ़ पोत॥५॥

॥इति मंगल पाठ॥

पूजन-पीठिका

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।
ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥१॥

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः (पुष्पांजलि क्षेपण करें)

चत्तारि मंगलं अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवललिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंते सरणं पव्वज्जामि,

सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि।
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि॥

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

अपिवत्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच - नमस्कारं, सर्व पापैः प्रमुच्यते॥१॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स, बाह्याभ्यंतरे शुचिः॥२॥
अपराजित - मंत्रोऽयं, सर्व - विघ्न - विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः॥३॥
एसो पंच-णमोयारो, सव्व-पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं॥४॥
अर्हमित्यक्षरं बह्म - वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम्॥५॥
कर्माष्टक विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यतम्॥६॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥७॥

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पवैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घवैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीभगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाण पंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचपरमेष्ठी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पवैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घवैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे॥२॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत-सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्त्रनाम का अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाममहं यजे॥३॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनअष्टाधिक-सहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

उदक - चंदन - तंदुल - पुष्पकैश्चरु - सुदीप - सुधूप - फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिनवांङमहं यजे॥४॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेंद्र-मभिवंद्य जगत्त्रयेशम्।
स्याद्वाद-नायक-मनंत-चतुष्टयार्हम्॥
श्रीमूलसंघ - सुदृशां सुकृतैकहेतुर्।
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥१॥
स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय।
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय॥
स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्ज्जित-दृङ् मयाय।
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय॥2॥
स्वस्त्युच्छल-द्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय।
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय॥

स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्गमाय।
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥३॥
द्रव्यस्य शुद्धि - मधिगम्य यथानुरूपं।
भावस्य शुद्धि मधिकामधिगंतुकामः॥
आलंबनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्।
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं॥४॥
अर्हन् पुराण पुरुषोत्तम पावनानि।
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव॥
अस्मिन्न्वल-द्विमल-वेकवल-बोधवह्नौ।
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि॥५॥

ॐ विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

स्वस्ति-मंगल पाठ

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनंदनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयांस स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनंतः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।
इति जिनेन्द्र स्वस्तिमंगलविधान।

।।पुष्पांजलिं क्षिपामि।।

परमर्षि स्वस्ति मंगल विधान

(प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये)

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्यय-शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१॥

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं, संभिन्न-संश्रोतृ-पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति-क्रियासुः परमर्षयो नः॥२॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान-बलाद्वहंतः, स्वास्तिक्रियासुः परमर्षयो नः॥३॥

प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग-निमित्त-विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥४॥

जंङ्घावलि-श्रेणि-फलांबु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥५॥

अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥६॥

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥७॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर-गुणाश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥८॥

आमर्ष - सर्वौषधयस्तथाशी - र्विषांविषा दृष्टिविषांविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥९॥

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो, मधु स्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवास-महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१०॥

॥इति परमर्षिस्वस्तिमंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

नवदेवता पूजन

– आ. वसुनंदी मुनि

स्थापना

(छंद–हरिगीतिका)

त्रैलोक्य में तिहुँ काल में, नवदेवता जग वंदिता।
अरिहंत सिद्धा सूरि पाठक, साधु मुनिवर नंदिता॥
जिन चैत्य अरु जिन सदन श्रुत, जिन धर्म कल्याणक महा।
आश्रित रहे जो भव्य इनके, मोक्ष उनने ही लहा॥

दोहा

नवदेवों को भक्ति वश, आह्वानन कर आज।
योगत्रय से पूजकर, लहूँ उभय साम्राज॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म–जिनागम–जिनचैत्य–चैत्यालय समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म–जिनागम–जिनचैत्य–चैत्यालय समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म–जिनागम–जिनचैत्य–चैत्यालय समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक (छंद–हरिगीतिका)

पूर्णेन्दु निर्मल ज्योत्सना सम, धवल शीतल नीर ले,
जन्मादि रोगत्रय विनाशूँ, देव पद त्रयधार दे।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म–जिनागम–जिनचैत्य–चैत्यालयेभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल सुगंधित मलयगिरि तन-ताप हारक चंदनं,
नव देवता के चरण आगे, भक्ति पूजा वंदनं।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वा. हा।

मुक्तासमा अति धवल द्युतिमय, चारु तंदुल लाय के,
शाश्वत विमल शिवसौख्य पाने, देव चरण चढ़ाय के।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वातावरण कर दे सुगंधित, पुष्प मनहर लाए हैं,
निष्काम जिन को कर समर्पित, काम नशने आये हैं।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वा. हा।

व्यंजन अनूपम सरस रुचिकर, देह की क्षुध नाशती,
आराध्य की पूजा करें तो, चेतना निधि भासती।
संसार नव विधिा नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गगन आँगन में चमकते, ज्योति ग्रह सम दीप हैं,
विधि मोहनी के नाश हेतू, आये आप समीप हैं।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश गंध युत ये धूप मनहर, वर्गणा दुख नाशती,
जिन चरण आगे धूप खेऊँ, आत्मनिधि परकाशती।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ मोक्ष फल को प्राप्त करने, भक्तिवश अर्पण किये,
मम अक्ष रुचिकर सरस मनहर, फल सभी ऋतु के लिये।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार की बहुमूल्य मंगल, अर्घ द्रव्यों का बना,
बहुमूल्य शिवपद पाने हेतू, भक्तिरस में मैं सना।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु - जिनधर्म-जिनागम - जिनचैत्य-जिनचैत्यालयेभ्यो नमः

(नौबार उक्त मंत्र पढ़कर पुष्प क्षेपण करें)

जयमाला

(छंद-लक्ष्मीधरा) (तर्ज-भौन बावन्न प्रतिमा....)

देव सर्वज्ञप्राणी सदा मंगलं, नंत ज्ञानं सुखं दर्श नंतं बलं।
प्रतिहार्य युतं वीतरागं वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥१॥

सिद्ध शुद्धं शिवं निर्विकारं तथा, अव्ययं अक्षयं आत्मलीनं सदा।
विश्वनाथं प्रभो मुक्तिवामा वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥२॥

दर्श और ज्ञान चारित्र संपोषकं, संघ संचालकं सूरि आराधकं।
पंच आचार पाले जिनं नंदनं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥३॥

हे उपाध्याय सुज्ञान दातार हो, भव्य के वासते सम्यकाधार हो।
साधकं द्वादशांगं सुपाठी वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥४॥

राग द्वेषादि को साधु संहारते, देव निर्ग्रंथ जो आत्म सम्हारते।
पालते हैं गुणं साधु मूलोत्तरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥५॥

भेद दो श्रावका और साधू कहा, तारता धर्म संसार से है अहा।
चिह्न स्याद्वाद से युक्त धर्मं वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥६॥

देव सर्वज्ञ द्वारा गयी है कही, गूंथते हैं गणेशा मुनी ने गही।
शारदा माँ सदा चित्त में ही धरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥७॥

सौख्य है निर्विकारी तथा शांत है, भक्ति करके बनेंगे वे मुक्तिकांत हैं।
कृत्रिमाकृत्रिमं चैत्य सिद्धीवरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥८॥

घत्ता

अरिहंत जिनेशा, सिद्ध महेशा, सूरी पाठक दिग्वासी।
श्रीचैत्य जिनालय, श्रुत ज्ञानालय, धर्म पूजता अविनाशी॥
वसु कर्म नशाए, वसुगुण पाए, वसु वसुधा को नित्य लहे।
वसुभूमि सभा की, सिद्ध रमा की, वसुनन्दी भी शीघ्र गहे॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

अर्हत् आदि नवदेवता, सदा करे उर वास।
पुष्पांजलि चढ़ाय के, पाऊँ मोक्ष निवास॥

(शान्तये... शांतिधारा पुष्पांजलि क्षिपामि)

श्री सिद्ध भक्ति (प्राकृत)

– (आ॰ वसुनंदी मुनि)

देहातीदे सिद्धे, अतीदे रसवण्णफासगंधादु।
पणविहसंसाररहिद - सिद्धे णमंसामि भत्तीइ॥1॥
संसारकारणादो, णाणावरणाइ - अट्ठ - कम्मादो।
विरहियाण सिद्धाणं - णमो णमो सुद्धभावेहिं॥2॥
रायद्देसमोहाइ - भावकम्मादु हीणाण सुद्धाण।
णिम्मलभावजुदाणं, णमो सया सव्वसिद्धाणं॥3॥
अग्गिणा सुतविदसुद्ध - कणयपासाणंव सोयिदा जेहि।
तवेणं णियप्पा ते, सव्व सिद्धा णमंसामि सय॥4॥

सम्मत्तणाणचरित्त - रूव - सिवमग्गं जेहिं गच्छित्ता।
लहिदा सस्सदसिद्धी, णमो ताण सव्व सिद्धाणं।।5।।
चित्ते उप्पज्जमाण - उत्तमखमाइ - भावेहिं णिच्चं।।
जेहिं लहिदा सिद्धी, णमो सया ताण सिद्धाणं।।6।।
धम्मज्झाणेणं पुण, सुक्कज्झाणरूवसमत्थत्थेण।
कम्मसत्तुविजेदू हु, सव्वविसुद्ध - सिद्धा णमामि।।7।।
कोह-माण-जिम्ह-लोह - कसायभावादो हीणा अयला।
अण्णकसायवज्जिदा, पणमामि णिरंजणासिद्धा।।8।।
खओवसमिग-ओदइय-उवसमिग-भावादु रहिदा णिच्चा।
खइयभावसहिदा चिय, सव्वसिद्धा णमंसामि हं।।9।।
सम्मत्त - णाण - दंसण - वीरिय - सुहुमत्तवगाहणत्तेहिं।
अगुरुलहु - अव्वाबाह - गुणजुत्ता पणमामि सिद्धा।।10।।
बावण्णप्पइडिणूण - बेसयप्पइडिविहीणासुद्धाय।
अंतातीदगुणजुदा, णमंसामि णिरुवमा सिद्धा।।11।।
णिक्कम्मा चिय पणविह - संसारहीणा देहविहीणा हु।
गमणागमणविहीणा, जम्ममरणविहीणा वंदे।।12।।

इच्छामि भंते! सिद्धभत्तीए काउसग्गं कडुअ भत्तिजणिददोसा आलोयमि। दव्वभावणोकम्महीणे सम्मत्ताइ-अट्ठमूलगुणजुत्ते अणंतोत्तरपज्जायसहिदे, लोयग्गठिदे सव्वसिद्धे सया णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

विधान प्रारंभ

श्री सुविधिनाथ विधान

॥ स्थापना ॥

(छंद-चउबोला)

(तर्ज-अनादिकाल से....)

शिवसुख शिवमग शान्तिप्रदायक, सुविधिनाथ जिन तीर्थंकर।
भवदुख नाशक कर्म विनाशक, भव्य जीव हित प्रीतिंकर॥
तीन लोक के जीव मात्र को, आप सदा क्षेमंकर हो।
वीतराग जिनदेव लोक में, अनुपम धर्म हितंकर हो॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुविधिनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुविधिनाथ-जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुविधिनाथ-जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

अथ अष्टक

(तर्ज-दरशविशुद्ध भावना भाय....)

सुर सरिता का जल ले आए, सहस हेम के कलश भराए।
सुविधि जिनदेव, करूँ रात - दिन तव पद सेव।
सुविधिनाथ की पूज रचाय, भव कारक सब विधि नश जाए।
सुविधि जिनदेव, करूँ रात - दिन तव पद सेव।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुविधिनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

बावन शीतल चंदन लाय, ता में केशर खूब मिलाय।
सुविधि जिनदेव, करूँ रात - दिन तव पद सेव।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुविधिनाथ-जिनेन्द्राय संसार-ताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

मुक्ता सम तंदुल शुभ लाए, रत्नथाल भर हम हर्षाए।
सुविधि जिनदेव, करूँ रात-दिन तव पद सेव।।टेक।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अक्षय-पद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

सब ऋतु के शुभ सुमन मँगाय, मदन नाश जिन चरण चढ़ाय।
सुविधि जिनदेव, करूँ रात-दिन तव पद सेव।।टेक।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुविधिनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

छप्पन विधि शुभ व्यंजन ल्याय, क्षुधा नाशने चरण चढ़ाए।
सुविधि जिनदेव, करूँ रात-दिन तव पद सेव।।टेक।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुविधिनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधादि रोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

कोटि दीप गौ घृत के लाए, मिथ्यात्रय अघ तिमिर नशाए।
सुविधि जिनदेव, करूँ रात-दिन तव पद सेव।।टेक।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुविधिनाथ-जिनेन्द्राय महा-मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

अगर तगर कर्पूर मिलाय, अगनी में खेकर हर्षाय।
सुविधि जिनदेव, करूँ रात-दिन तव पद सेव।।टेक।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अष्ट कर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

षट्ऋतु के उत्तम फल लाय, शुभ फल पाने चरण चढ़ाय।
सुविधि जिनदेव, करूँ रात-दिन तव पद सेव।।टेक।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुविधिनाथ-जिनेन्द्राय महा-मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

नीरादिक वसु द्रव्य मिलाय, पद अनर्घ हितु नित्य चढ़ाय।
सुविधि जिनदेव, करूँ रात-दिन तव पद सेव।।टेक।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

पंचकल्याणक-अर्घ्यावली

(छंद-पायत्ता)

फागुन वदि नवमी आयी, श्री रमा मात हर्षायी।
काकंदी धन्य सुकीना, हम पूजें चरण नवीना।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण-नवम्यां गर्भमंगल-प्राप्ताय श्री सुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

सित मंगसिर एकम् प्यारी, चउ देवों को सुखकारी
शुभ जन्म कल्याण मनायो, क्षिति पर दश अतिशय छायो।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ल-प्रतिपदायां जन्ममंगल-प्राप्ताय श्री सुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

मंगसिर सित एकम् जानो, तप ग्रहण करा शिव ठानो।
लौकांतिक हर्ष मनावें, हम सब मिल पूज रचावें।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ल-प्रतिपदायां तपोमंगल-मंडिताय श्री सुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

कार्तिक सित द्वितीया जानो, तह केवलज्ञान प्रमानो।
भए लोकालोक सुज्ञाता, भवि पूजि लहे सुखसाता

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ल-द्वितीयायां ज्ञानमंगल-मंडिताय श्री सुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

भादो सित अष्टम प्यारी, परिणायी सु मुक्ति न्यारी।
सुप्रभ शुभ कूट सु माना, मन चरण पूजि हर्षाना।

ॐ ह्रीं भाद्रपद-शुक्लाऽष्टम्यां मोक्षमंगल-प्राप्ताय श्री सुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।5।।

जय माला

(छंद-शम्भू) (तर्ज-हे चंद्रप्रभु...)

शुभकारी काकंदी नगरी, श्री सुविधिनाथ प्रभु जन्म लिया।
सुग्रीव-रमा पितु-माता को, हे देव आपने धन्य किया।।
जिन धर्म प्रवर्तन करके प्रभु, तुम नव युग का निर्माण किया।
भव दुख पीड़ित भविजन हेतू, धर्मामृत का उपदेश दिया।।1।।

अट्ठारह दोष रहित जिनवर, तुम कार्य शत्रु चकचूर किया।
चेतन के शाश्वत नंत गुणों से, आप स्वयं को पूर लिया।
अक्षय सुख द्वार, रहित अर्गल, निश्चित तव भक्ति हि करती है।
भव-भव के अनादि दु:खों को, तेरी शुभ अर्चन करती है।।2।।

स्याद्वादमयी वाणी तेरी, भवि को भव नौका सम जानो।
जिस सुख के पीछे दु:ख नहीं, देती शाश्वत सुख पहचानो।।
मृत्यु रूपी वह्नि प्रचण्ड पर, तव दर्शन भारी वर्षा।
जिनवर भक्तों के जीवन में, अनुपम आनंद सदा बरसा।।3।।

हे उभय लक्ष्मी सु युक्त ईश, तव महिमा का कोई न पार।
पूजन विधान करने वाले, भव-शिव सुख पाते हैं अपार।।
श्री सुविधिनाथ तव चरणों में, मैं वंदन करता बार-बार।
तव बंधन से निश्चित होते, कर्मों के बंधन तार-तार।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुविधिनाथ - जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

।।प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

प्रथम वलय

अनंत चतुष्टय के अर्घ

(छंद-अडिल्ल) (तर्ज-सोलहकारण भाए....)

ज्ञानावरण नशाय आप केवल पाया।
केवल बुध पाने मम मन भी ललचाया।।
सुविधिनाथ के चरण कमल मैं नित वंदूँ।।
पंचावरण नशाय लहूँ निज आनंदूँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतज्ञानगुण-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

नवविधि दर्शनावरण नश क्षायिक पाया।
तत्क्षण दर्शन गुण अनंत निज प्रगटाया।।
कर्म वशी हो मम आतम भव-भव तरसी।
नवविधि कर्म नाश होऊँ अब शिवदर्शी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतदर्शनगुण-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

अंतराय की पाँच प्रकृति तप से नाशी।
पाकर वीर्य अनंत हुए निज घटवासी।
हे अनंत बलधारी तव चरणा आऊँ।
नाशूँ कर्म सभी अनंत बल को पाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतवीर्यगुण-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

कर्म मोहनी नाश आपने सुख पाया।
उस अनंत सुख को पाने मैं भी आया।
मोहादिक अठबीस नाश सुख नंत धरें।
तव पूजन से भविजन मुक्ति कंत बनें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतसुखगुण-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

पूर्णार्घ

(छंद-धत्ता)

हे निजगुण संता, जिन भगवंता, मुक्तिसुकंता, दुःख हरो।

तम मोह विनाशो, ज्ञान प्रकाशो, मम उर वासो, सुक्ख करो॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतचतुष्टयगुण-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

॥द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

द्वितीय वलय

अष्ट प्रातिहार्य के अर्घं

(छंद-चउबोला)

तरु अशोक के निकट मनोहर, भव्य सुखद जिन राजित हैं।
नंत चतुष्टय धारी हैं वे, समवशरण सु विराजित हैं॥
सुविधिनाथ तिहुँ जग हितकारी, सर्व पाप विध्वंसक हैं।
हम सब पूज रचावें उनकी, हम भी उनके वंशज हैं॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य-मंडिताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

मणिमय सिंहासन पर राजित, तीन लोक के तुम स्वामी।
मेरे हृदय कमल में राजो, बन जाऊँ मैं निष्कामी॥
सुविधिनाथ तिहुँ जग हितकारी, सर्व पाप विध्वंसक हैं।
हम सब पूज रचावें उनकी, हम भी उनके वंशज हैं॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिंहासन-सत्प्रातिहार्य-मंडिताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

तीन लोक के हो तुम स्वामी, तीन छत्र तव सिर सोहें।
त्रय प्रदक्षिणा देकर तुमको, निकट भव्य के मन मोहें।।
सुविधिनाथ तिहुँ जग हितकारी, सर्व पाप विध्वंसक हैं।
हम सब पूज रचावें उनकी, हम भी उनके वंशज हैं।।3।।
ॐ ह्रीं अर्हं त्रयछत्र-सत्प्रातिहार्य-मंडिताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

भामण्डल में भव्यजनों को, भव निज के नित सप्त दिखें।
भव्य जीव भगवत् सु भक्ति से, अपने भव के भाग्य लिखें।।
सुविधिनाथ तिहुँ जग हितकारी, सर्व पाप विध्वंसक हैं।
हम सब पूज रचावें उनकी, हम भी उनके वंशज हैं।।4।।
ॐ ह्रीं अर्हं भामंडल-सत्प्रातिहार्य-मंडिताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

समवशरण में दिव्यध्वनि से, भवि के त्रय तम नश जाते।
आप्त भक्ति कर भविजन निश्चित, मुक्ति सु पद को हैं पाते।।
सुविधिनाथ तिहुँ जग हितकारी, सर्व पाप विध्वंसक हैं।
हम सब पूज रचावें उनकी, हम भी उनके वंशज हैं।।5।।
ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यध्वनि-सत्प्रातिहार्य-मंडिताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

सुमन वृष्टि विद्याधर करते, मन को सुमन बना करके।
पुण्य पुष्प हम भी तब पावें, भक्ति पूज रचना करके।।
सुविधिनाथ तिहुँ जग हितकारी, सर्व पाप विध्वंसक हैं।
हम सब पूज रचावें उनकी, हम भी उनके वंशज हैं।।6।।
ॐ ह्रीं अर्हं पुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्य-मंडिताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

चौसठ चँवर ढुरें नित तुम पर, मानों कर्म भगाते हैं।
भविजन अनुमोदन करके नित, अपने पाप नशाते हैं।।

सुविधिनाथ तिहुँ जग हितकारी, सर्व पाप विध्वंसक हैं।
हम सब पूज रचावें उनकी, हम भी उनके वंशज हैं।।7।।
ॐ ह्रीं अर्हं चतु:षष्टिचँवर -सत्प्रातिहार्य-मंडिताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नम: अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

देव दुन्दुभि गगन में गूँजी, दुख विकल्प सब नश जावें।
निकट भव्य नित तव सु भक्ति कर, सुखद मोद नित-नित पावें।।
सुविधिनाथ तिहुँ जग हितकारी, सर्व पाप विध्वंसक हैं।
हम सब पूज रचावें उनकी, हम भी उनके वंशज हैं।।8।।
ॐ ह्रीं अर्हं देवदुन्दुभि-सत्प्रातिहार्य-मंडिताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नम: अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

पूर्णार्घ्य

(दंद-घत्ता)

तव पद का वंदन, नाशे क्रंदन, तव पद लागे कुंदन से।
करता अभिनंदन, हे शिवनंदन, मुक्त करें भव बंधन से।।
ॐ ह्रीं अर्हं अष्टप्रातिहार्य-मंडिताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नम: महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

।।तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

तृतीय वलय

सोलहकरण भावना के अर्घ

(ज्ञानोदय छंद)

परम रूप जिन शास्त्र गुरू के प्रति श्रद्धा जो करते हैं।
दोष पच्चीसों आप नश के, निज को निर्मल करते हैं।
दर्श विशुद्धि भावना सोलह, तीर्थंकर पद की दाता।
पूजन अर्चन करके भाऊँ, मिलती मुझको निज साता।।1।।
ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनविशुद्धिभावना - फलसंयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नम: अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

विनय मोक्ष का द्वार नादि से, भव के बंध नशाता है।
इसीलिए मम चित्त सदा ही, विनय भावना भाता है।।
दर्श विशुद्धि भावना सोलह, तीर्थंकर पद की दाता।
पूजन अर्चन करके भाऊँ, मिलती मुझको निज साता।।2।।
ॐ ह्रीं अर्हं विनयसम्पन्नता-भावना-फलसंयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

शील शील है शिवपंथी का, शील बिना भव-दुःखसिंधु।
शील महाव्रत इस विध जानो, ज्यों ज्योतिष ग्रह में इंदू।।
दर्श विशुद्धि भावना सोलह, तीर्थंकर पद की दाता।
पूजन अर्चन करके भाऊँ, मिलती मुझको निज साता।।3।।
ॐ ह्रीं अर्हं शीलव्रतेष्वनतिचार-भावना-फलसंयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

मन चंचल है सभी जनों का, स्थिर करना कठिन कहा।
पुनः पुनः उपयोग ज्ञान का, निर्मल अनुपम बोध महा।।
दर्श विशुद्धि भावना सोलह, तीर्थंकर पद की दाता।
पूजन अर्चन करके भाऊँ, मिलती मुझको निज साता।।4।।
ॐ ह्रीं अर्हं अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-भावना-फलसंयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

धर्म धर्मफल वा धर्मी को, लखकर चित हर्षाता है।
भा संवेग भावना प्राणी, भवदिध से तिर जाता है।।
दर्श विशुद्धि भावना सोलह, तीर्थंकर पद की दाता।
पूजन अर्चन करके भाऊँ, मिलती मुझको निज साता।।5।।
ॐ ह्रीं अर्हं संवेग-भावना-फलसंयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ- जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

निज सु शक्ति को देख सदा जो, भवकारक अघ त्याग करें।
अक्षय इतर दान दें चारों, नंत चतुष्टय नित्य वरें।।

दर्श विशुद्धि भावना सोलह, तीर्थंकर पद की दाता।
पूजन अर्चन करके भाऊँ, मिलती मुझको निज साता।।6।।
ॐ ह्रीं अर्हं शक्तिपस्त्याग-भावना-फलसंयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

द्वादश विध तप करते मुनिजन, कर्म कालिमा ध्वस्त करें।
शुद्ध स्वर्ग सम बनकर यति वे, मुक्ति रमा का वरण करें।।
दर्श विशुद्धि भावना सोलह, तीर्थंकर पद की दाता।
पूजन अर्चन करके भाऊँ, मिलती मुझको निज साता।।7।।
ॐ ह्रीं अर्हं शक्तितस्तप-भावना-फलसंयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

साधुजनों के धर्म ध्यान में, सहयोगी बन वृष पालें।
लहें स्वभाविक गुण वे अपने, पंक अघादिक सब टालें।।
दर्श विशुद्धि भावना सोलह, तीर्थंकर पद की दाता।
पूजन अर्चन करके भाऊँ, मिलती मुझको निज साता।।8।।
ॐ ह्रीं अर्हं साधुसमाधि-भावना-फलसंयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

साधक जन के धर्ममार्ग के, विघ्न सभी व्यावृत करते।
वैयावृत्ति व मुनिसेवा से, भविजन निज गुण निधि वरते।।
दर्श विशुद्धि भाव सोलह, तीर्थंकर पद की दाता।
पूजन अर्चन करके भाऊँ, मिलती मुझको निज साता।।9।।
ॐ ह्रीं अर्हं वैयावृत्य-भावना-फलसंयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

तीन लोक में पूजनीय जिन, अर्हद् की भक्ती करके।
भविजन भवदधि तिर जाते हैं, भक्ति रूप नौका चढ़के।।

दर्श विशुद्धि भाव सोलह, तीर्थंकर पद की दाता।
पूजन अर्चन करके भाऊँ, मिलती मुझको निज साता।।10।।
ॐ ह्रीं अर्हं अर्हद्भक्ति-भावना-फलसंयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

पंचाचार पालते सूरी, भव्यों से भी पलवाते।
संघानुग्रह कुशल यतीश्वर, भव्य भक्ति कर तिर जाते।।
दर्श विशुद्धि भावना सोलह, तीर्थंकर पद की दाता।
पूजन अर्चन करके भाऊँ, मिलती मुझको निज साता।11।।
ॐ ह्रीं अर्हं आचार्यभक्ति-भावना-फलसंयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

स्वपर समय के ज्ञाता पाठक, आत्म रमण नित करते हैं।
भव्यों को उपदेश देय नित, अघ समूह को हरते हैं।।
दर्श विशुद्धि भावना सोलह, तीर्थंकर पद की दाता।
पूजन अर्चन करके भाऊँ, मिलती मुझको निज साता।12।।
ॐ ह्रीं अर्हं बहुश्रुत-भक्ति-भावना-फलसंयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

तीर्थंकर की दिव्यध्वनि ही, प्रवचन जग में कहलाती।
साधु की भक्ति और भावना, मार्ग मोक्ष का दिखलाती।।
दर्श विशुद्धि भावना सोलह, तीर्थंकर पद की दाता।
पूजन अर्चन करके भाऊँ, मिलती मुझको निज साता।।13।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रवचन-भक्ति-भावना-फलसंयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

श्रावकजन वा श्रमणयतीजन, षट्विध आवश्यक पालें।
शुद्धहृदय से करें भावना, कर्म नंतभव के टालें।।

दर्श विशुद्धि भावना सोलह, तीर्थंकर पद की दाता।
पूजन अर्चन करके भाऊँ, मिलती मुझको निज साता।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं आवश्यकापरिहाणि-भावना-फलसंयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

सम्यग्दृष्टि सुनिश्चित जिनवृष, की प्रभावना करते हैं।
जिनशासन के थंभ महा वे, सिद्धरमापति बनते हैं।।
दर्श विशुद्धि भावना सोलह, तीर्थंकर पद की दाता।
पूजन अर्चन करके भाऊँ, मिलती मुझको निज साता।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गप्रभावना-भावना-फलसंयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

धर्मी सौं गौवच्छ प्रीति नित, आत्म गुणों में लीन रहें
वत्सल भावन भाके भविजन, कर्मेंधन को नित्य दहें।।
दर्श विशुद्धि भावना सोलह, तीर्थंकर पद की दाता।
पूजन अर्चन करके भाऊँ, मिलती मुझको निज साता।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रवचनवत्सल-भावना-फलसंयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

पूर्णार्घ

(छंद-घत्ता)

शुभ दर्शविशुद्धी, सोलह भावन, जो भविजन निशदिन भाते।
वे तीर्थंकर की, पदवी पाकर, मुक्तिरमा को परिणाते।।

ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनविशुद्ध्यादि-सोलहकारणभावना-फलसंयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद-प्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

चतुर्थ वलय

बत्तीस जिनोपदेश अर्घ

षट् आवश्यक (छंद-हरिगीतिका)

शुभभावनाओं का सुखद वृष, नीर चित शोधन करे।
सब राग-द्वेष विकार तजकर, चित्त में समता धरें।।
समतादि आवश्यक सुपालें, सुविधि जिनवर सुखकरं।।
नोकर्म द्रव्य रु भाव नशकर, लहूँ सिद्धी हितकरं।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्वात्रिंशतुपदेश-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ- जिनेन्द्राय नमः समताभाव-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

तीर्थेश की नित वंदना भवि, भाव से करते सदा।
प्रभु वंदना से कर्म अरि का, बंध होवे ना कदा।।
समतादि आवश्यक सुपालें, सुविधि जिनवर सुखकरं।
नोकर्म द्रव्य रु भाव नशकर, लहूँ सिद्धी हितकरं।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्वात्रिंशतुपदेश-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ- जिनेन्द्राय नमः वंदनाभाव-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

चउबीस जिन की थुति करूँ मैं, पाप पंक सुधोवने।
शुभ चेतना के गुण सुपावन, भव्यजन चित मोहने।।
समतादि आवश्यक सुपालें, सुविधि जिनवर सुखकरं।
नोकर्म द्रव्य रु भाव नशकर, लहूँ सिद्धी हितकरं।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्वात्रिंशतुपदेश-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ- जिनेन्द्राय नमः स्तुतिभाव-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

संप्रति लगे जो दोष व्रत में, प्रतिक्रमण क्षालन करे।
प्रतिदिन यति कर शुद्ध निज चित, ध्यान जिनवर का करे।।

समतादि आवश्यक सुपालें, सुविधि जिनवर सुखकरं।
नोकर्म द्रव्य रु भाव नशकर, लहूँ सिद्धी हितकरं।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्वात्रिंशतुपदेश-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ- जिनेन्द्राय नमः प्रतिक्रमणभाव-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

होवें अनागत में कभी ना, दोष मेरे धर्म में।
करता सदा मैं त्याग उनका, कर्म प्रत्याख्यान मैं।।
समतादि आवश्यक सुपालें, सुविधि जिनवर सुखकरं।
नोकर्म द्रव्य रु भाव नशकर, लहूँ सिद्धी हितकरं।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्वात्रिंशतुपदेश-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ- जिनेन्द्राय नमः प्रत्याख्यानभाव-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।

निज देह से रागादि तजकर, ध्यान मैं नित ही करूँ।
उत्सर्ग कर निज देह से शुभ, आत्म वैभव को वरूँ।।
समतादि आवश्यक सुपालें, सुविधि जिनवर सुखकरं।
नोकर्म द्रव्य रु भाव नशकर, लहूँ सिद्धी हितकरं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्वात्रिंशतुपदेश-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ- जिनेन्द्राय नमः कायोत्सर्गभाव-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।

12 अंग के अर्घ

(छंद-नरेंद्र/तर्ज : रोम-रोम से....)

आचारांग प्रथम शुभ अंगा, सदाचार को कहता।
सहस अठारह पद हैं जिसमें, धर्म नित्य शुभ बहता।
बारह अंगों से शोभित है, द्वादशांग ये प्यारा।
भव्यजनों को इस भवदधि से, द्वादशांग ने तारा।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ- जिनेन्द्राय नमः आचारांगज्ञान-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।

व्यवहार धर्म किरिया आदिक व, स्व-पर समय बतलावे।
सहस छतीस सूत्रपद जिसमें, भवि के पाप नशावें॥
बारह अंगों से शोभित है, द्वादशांग ये प्यारा।
भव्यजनों को इस भवदधि से, द्वादशांग ने तारा॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ- जिनेन्द्राय नमः सूत्रकृतांगज्ञान-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।

एक-एक पद भेद बतावे, नित-नित वृद्धि करके।
ठाण अंग तीजो सहस्र, बेदाल सुमति पद वरके।
बारह अंगों से शोभित है, द्वादशांग ये प्यारा।
भव्यजनों को इस भवदधि से, द्वादशांग ने तारा॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ- जिनेन्द्राय नमः स्थानांगज्ञान-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।

पूर्ण द्रव्य पद का समवायक, समवायांग सु जानो।
लख एक चौसठ सहस्र पद, चेतन गुण पहचानो।
बारह अंगों से शोभित है, द्वादशांग ये प्यारा।
भव्यजनों को इस भवदधि से, द्वादशांग ने तारा॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ- जिनेन्द्राय नमः समवायांगज्ञान-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।

साठ सहस प्रश्नों के उत्तर, व्याख्या पण्णति कहती।
सहस अठाइस उत्तर दो लख, पद जिनवाणी गहती॥
बारह अंगों से शोभित है, द्वादशांग ये प्यारा।
भव्यजनों को इस भवदधि से, द्वादशांग ने तारा॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ- जिनेन्द्राय नमः व्याख्याप्रज्ञप्त्यांग-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।

तीर्थंकर गणधर केवलि की, ज्ञातृकथा सुखकारी।
पाँच लाख छप्पन हजार पद, निश्चित भवदुखहारी॥

बारह अंगों से शोभित है, द्वादशांग ये प्यारा।
भव्यजनों को इस भवदधि से, द्वादशांग ने तारा।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ- जिनेन्द्राय नमः ज्ञातृकथांगज्ञान-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।45।।

उपासकाध्ययन के अध्ययन में, श्रावक का वृष सारा।
ग्यारह लाख हजार सुसत्तर, पद मेटे दुख भारा।
बारह अंगों से शोभित है, द्वादशांग ये प्यारा।
भव्यजनों को इस भवदधि से, द्वादशांग ने तारा।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ- जिनेन्द्राय नमः उपासकाध्ययनांग-ज्ञान-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।46।।

अंतःकृत केवली दस होते, हर तीर्थंकर शासन।
लाख तेईस रु सहस अठाइस, पद शोभे मनभावन।।
बारह अंगों से शोभित है, द्वादशांग ये प्यारा।
भव्यजनों को इस भवदधि से, द्वादशांग ने तारा।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ- जिनेन्द्राय नमः अंतःकृदृशांग-ज्ञान-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।47।।

सह उपसर्ग कठिन मुनिवर दस, पंच अनुत्तर साजे।
लाख बानवें सहस चवालिस, पद इस अंग में साजे।।
बारह अंगों से शोभित है, द्वादशांग ये प्यारा।
भव्यजनों को इस भवदधि से, द्वादशांग ने तारा।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान - संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ- जिनेन्द्राय नमः अनुत्तरौपपादिकदशांगज्ञान-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।48।।

आक्षेपिणी आदि सुकथाएँ, प्रश्न व्याकरण कहता।
सोलह सहस्र तिनवति लक्षा, पद में जिनवृष बहता।।

बारह अंगों से शोभित है, द्वादशांग ये प्यारा।
भव्यजनों को इस भवदधि से, द्वादशांग ने तारा॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ- जिनेन्द्राय नमः प्रश्नव्याकरणांगज्ञान-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।49।।

पुण्य-पाप कर्मों के फल को, विपाक सूत्र विस्तारे।
एक कोटि लख चौरासी पद, भवि के अघ संहारे॥
बारह अंगों से शोभित है, द्वादशांग ये प्यारा।
भव्यजनों को इस भवदधि से, द्वादशांग ने तारा॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ- जिनेन्द्राय नमः विपाकसूत्रांगज्ञान-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।50।।

दृष्टिवाद शुभ अंग बारवाँ, एकअरब वसु कोटि।
अडसठ लख छप्पन हजार पन, पद को नमन है कोटि॥
बारह अंगों से शोभित है, द्वादशांग ये प्यारा।
भव्यजनों को इस भवदधि से, द्वादशांग ने तारा॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः दृष्टिवादांगज्ञान-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।51।।

14 पूर्वों के अर्घ

(सार छंद/तर्ज-पीछी रे पीछी)

प्रथम पूर्व में दस सु वस्तु, प्राभृत दो सौ पहचानो।
व्यय-उत्पाद-ध्रौव्य का वर्णन, करता है शुभ जानो॥
एक करोड पदों से युत, उत्पाद पूर्व को ध्याऊँ।
सुविधिनाथ तीर्थंकर के युग, पद में शीश झुकाऊँ॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः उत्पादपूर्व-ज्ञान-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।52।।

चौदह वस्तु प्राभृत दो सौ, अस्सी ऊपर जानो।
अंग अग्र परिमाण बतावे, स्वपर भेद पहचानो॥

लाख छयानवे पदो से युत, अग्रायणीय को ध्याऊँ।
सुविधिनाथ तीर्थंकर के युग, पद में शीश झुकाऊँ।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अग्रायणीपूर्व-ज्ञान-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।53।।

आठ वस्तु शत षष्टि प्राभृत, सबके शुभ बल कहता।
भविजन निज बल प्रगटाने को, सुविधि चरण नित रहता।।
सत्तरलाख पदों के द्वारा वीरजवाद को ध्याऊँ।
सुविधिनाथ तीर्थंकर के युग, पद में शीश झुकाऊँ।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः वीर्यानुवादपूर्व-ज्ञान-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।54।।

वस्तु अठारह-त्रिशत षष्टि, प्राभृत मनहर साजे।
जीव अजीव सभी द्रव्यों के, अस्ति नास्ति गुण साजे।।
साठ लाख पद अस्तिनास्ति, परवाद पूर्व को ध्याऊँ।
सुविधिनाथ तीर्थंकर के युग, पद में शीश झुकाऊँ।।22।।ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः प्रवादपूर्व-ज्ञान-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।55।।

बारह वस्तु चालिस दो सौ, प्राभृत मंगलकारी।
पंच ज्ञान अज्ञान त्रय को, कहता श्रुत अघहारी।
एक न्यून कोटि इक पद से, ज्ञानप्रवाद सुध्याऊँ।
सुविधिनाथ तीर्थंकर के युग, पद में शीश झुकाऊँ।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ- जिनेन्द्राय नमः ज्ञानप्रवादपूर्व-ज्ञान-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।56।।

बारह वस्तु दो शत चालिस, प्राभृत सत्य सुभाषे।
सत्यासत्य वचन को कहकर, नित शिव पंथ प्रकाशे।।

षट उत्तर इक कोटि पद में, सत्य प्रवाद सुध्याऊँ।
सुविधिनाथ तीर्थंकर के युग, पद में शीश झुकाऊँ।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ- जिनेन्द्राय नमः सत्यप्रवादपूर्व-ज्ञान-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।57।।

सोलह वस्तु सु बीस तीन सौ, प्राभृत आत्म प्रणीता।
असंख्य रूप से जीव तत्त्व का, वर्णन करे सुगीता।।
कोटि छबीस पदों के द्वारा, आत्म प्रवाद को ध्याऊँ।
सुविधिनाथ तीर्थंकर के युग, पद में शीश झुकाऊँ।।25

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ- जिनेन्द्राय नमः आत्मप्रवादपूर्व-ज्ञान-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।58।।

वस्तु प्राभृत चतुशत हैं, कर्म प्रकाशक न्यारा।
वसुविध भाव द्रव्य कर्मों का, इसमें कथन अपारा।
लाख अशीति कोटि एक पद, कर्म प्रवाद को ध्याऊँ।
सुविधिनाथ तीर्थंकर के युग, पद में शीश झुकाऊँ।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः कर्मप्रवादपूर्व-ज्ञान-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।59।।

तीस वस्तु छः सौ प्राभृत युत, व्रत उपवास बताए।
गुप्ति समिति अरु व्रत पालन विधि, भव्यों को समझाए।।
लाख चौरासी पद के द्वारा प्रत्याख्यान सु ध्याऊँ।
सुविधिनाथ तीर्थंकर के युग, पद में शीश झुकाऊँ।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः प्रवादपूर्व-ज्ञान-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।60।।

पंद्रह वस्तु तीन सौ प्राभृत, बहुविध विद्या भाषे।
मिथ्यात्रय अज्ञान नशावे, सम्यक् ज्ञान प्रकाशे।।

एक कोटि दस लाख पदों से, विद्या पूर्व को ध्याऊँ।
सुविधिनाथ तीर्थंकर के युग, पद में शीश झुकाऊँ।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः विद्यानुवादपूर्व-ज्ञान-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।61।।

दस सु वस्तु दो सौ प्राभृत में, कल्याणक शुभ गाते।
ज्योतिष ग्रह के चर क्षेत्रों को, विस्तृत जिन बतलाते।
कोटि छबीस पदों से युत, कल्याणवाद को ध्याऊँ।
सुविधिनाथ तीर्थंकर के युग, पद में शीश झुकाऊँ।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः कल्याणवादपूर्व-ज्ञान-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।62।।

दस सु वस्तु दो सौ प्राभृत में, देह चिकित्सा वरणी।
प्राणायम सु भेद विध कहकर, नित्य देह सुखकरनी।।
तेरह कोटि पदों के द्वारा, प्रणावाय को ध्याऊँ।
सुविधिनाथ तीर्थंकर के युग, पद में शीश झुकाऊँ।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः प्राणावायपूर्व-ज्ञान-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।63।।

दस सु वस्तु दो सौ प्राभृत में, कला बहुत विस्तारी।
नर-नारी की कला बहुत गुण, काव्य कला गुणधारी।।
नव सु कोटि शुभ पद के द्वारा, क्रियाविशाला ध्याऊँ।
सुविधिनाथ तीर्थंकर के युग, पद में शीश झुकाऊँ।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः क्रियाविशालपूर्व-ज्ञान-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।64।।

दस सु वस्तु दो सौ प्राभृत में, क्रिया मोक्ष की कहते।
वसु व्यवहार बीज चदु कहते, शिवमुख में शिव रहते।।
लाख पचास कोटि बारह पद, लोक बिंदु को ध्याऊँ।
सुविधिनाथ तीर्थंकर के युग, पद में शीश झुकाऊँ।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञान-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः लोकबिन्दुसारपूर्व-ज्ञान-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।65।।

पूर्णार्घं

(छंद-घत्ता)

हे जिनवर ईशा, वृष बत्तीसा, गहें मुनीशा सुखकारी।
हम पूज रचावें, भक्ति सु गावें, अर्घ चढ़ावें हितकारी॥

ॐ ह्रीं अर्हं द्वात्रिंशतुपदेश-संयुक्ताय श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद-प्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य-ॐ ह्रीं अर्हं शिवमार्ग-सुविधि प्रदायक श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा

सुविधिनाथ से विधि मिली, शिवमग की निकलंक।
भवकारक विधि पंक धो, लहूँ शरण जिन अंक॥

(चौपाई-छंद)

पुष्पदंत भगवंत नमस्ते, भवभंजक जयवंत नमस्ते।
प्रणीमात्र सुखकार नमस्ते, विघ्न नाश अविकार नमस्ते॥1॥
कर्मनाश शिवकंत नमस्ते, भव्यों के शिवपंथ नमस्ते।
सिद्धालय के सिद्ध नमस्ते, केवलज्ञानी बुद्ध नमस्ते॥2॥
दुख परिहारक नाथ नमस्ते, श्रेयमार्ग सुप्रभात नमस्ते।
भवि अंबुज हितु सूर्य नमस्ते, दर्श-ज्ञान-सुख-वीर्य नमस्ते॥3॥
अरि रज-रहस विहीन नमस्ते, निजानंद तल्लीन नमस्ते।
अघमल शोधक नित्य नमस्ते , शत इन्द्रन संस्तुत्य नमस्ते॥4॥
रतिपति विजयी प्रभो नमस्ते, ज्ञान प्रकाशक विभो नमस्ते।
तीर्थंकर जिनचंद्र नमस्ते, पुण्य विकासक इंदु नमस्ते॥5॥
भवजल शोषक मिहिर नमस्ते, हारक वसुविधि तिमिर नमस्ते।
अक्षय दानि योगी नमस्ते, स्वात्म रस के भोगी नमस्ते॥6॥

अनुपमेय शुभ तीर्थ नमस्ते, श्रेयरूप जग कीर्ति नमस्ते।
तीन लोक जिनश्रेष्ठ नमस्ते, देवों में जिन ज्येष्ठ नमस्ते॥7॥
जन्म जरा-मृतु हनन नमस्ते, नंत चतुष्टय श्रमण नमस्ते।
कल्याणालय नाथ नमस्ते, अक्षय अव्याबाध नमस्ते॥8॥
नयन सुवल्लभ मीत नमस्ते, मोक्ष मार्ग शुभ रीति नमस्ते।
कर्म वृक्ष निर्मूल नमस्ते, भव्यों को भवकूल नमस्ते॥9॥
भूषण अंबर रहित नमस्ते, प्रातिहार्य वसु सहित नमस्ते।
तत्त्व अर्थ प्रतिपाद नमस्ते, श्रेयस्कर जगनाथ नमस्ते॥10॥
सतभंगी ध्वनि युक्त नमस्ते, भव-भव बंधन मुक्त नमस्ते।
प्राणेश्वर मम देव नमस्ते, कोटि-कोटि जिनदेव नमस्ते॥11॥

दोहा

शिवमग सुविधि जिन रहे, श्रेष्ठ सुविधि अनुसार।
भविजन सुविधि सु पायकर, होएँ भवदधि पार॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय नमः जयमाला संपूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

वसुविध विधि को नाशकर, वसु गुण निज प्रगटाय।
वसु वसुधा वसु नंद गुण, लहें सदा सुखदाय।
इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

समुच्चय महार्घ्य

मैं देव श्री अरहंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवज्झाय पूजूँ, साधू पूजूँ भाव सों॥
अरहन्त भाषित बैन पूजूँ, द्वादशांग रचे गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरण, शिवहेत सब आशा हनी॥
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा।
जजि भावनाषोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा॥
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम, चैत्य-चैत्यालय जजूँ।
पंचमेरु-नन्दीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूँ॥
कैलाश श्री सम्मेदगिरि, गिरनार मैं पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा॥
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जप, होय पति शिव गेह के॥

दोहा

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहु विधि भक्ति बढ़ाय॥

ॐ ह्रीं भावपूजा - भाववन्दना - त्रिकालपूजा - त्रिकालवन्दना - कृत- कारितानुमोदनैः सहितं श्री अरिहन्त - सिद्ध - आचार्य - उपाध्याय - सर्वसाधु- पञ्च परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग - करणानुयोग - चरणानुयोग - द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि - दशलक्षण - धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शनसम्यग्ज्ञानसम्यक्चारित्रेभ्यो नमः।

जल - थल - आकाश - गुहा - पर्वत - नगरवर्ति - ऊर्ध्व - मध्य - अधोलोकेषु विराजमान - कृत्रिम - अकृत्रिम - जिन - चैत्यालय - जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान - विंशतितीर्थङ्करेभ्यो नमः। पञ्च - भरत - पञ्च - ऐरावत - दशक्षेत्र - सम्बन्धि - त्रिंशत् - चतुर्विंशतिगत - विंशत - उत्तर

– सप्तशत – जिनबिम्बेभ्यो नमः। नन्दीश्वरद्वीप – सम्बन्धि – द्वीपञ्चाशत् जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पञ्चमेरुसम्बन्धि – अशीति – जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर – कैलाश – चम्पापुर – पावापुर – गिरनार – सोनागिरि – राजगृही – मथुरा – शत्रुञ्जय – तारङ्गा – कुण्डलपुर आदि – सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री – मूढ़बद्री – हस्तिनापुर – चन्देरी – पपौरा – अयोध्या – चमत्कारजी – महावीरजी – पद्मपुरी – तिजारा – आदि – अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः श्रीचारणऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपावतं श्रीवृषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशतितीर्थङ्करपरमदेवं आद्यानां जम्बूद्वीपे मेरु दक्षिण भागे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे....नाम्नि नगरे....मासानामुत्तमे...मासे....पक्षे.... तिथौ.....वासरे.... मुन्यार्यिका-श्रावक- श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं अनर्घ्यपदप्राप्तये सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति-पाठ (भाषा)

चौपाई

शांतिनाथ मुख शशि-उनहारी, शील-गुण-व्रत-संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमलदल लाजैं।।
पंचम चक्रवर्ति पद धारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र-नरेन्द्र पूज्य जिन-नायक, नमो शांति-हित शांति विधायक।।
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।।
शांति-जिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजौं शिर नाई।
परम शांति दीजे हम सबको, पढ़ैं तिन्हें पुनि चार संघ को।।

वसन्ततिलका

पूजै जिन्हें मुकुट-हार-किरीट लाके।
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।।

सो शांतिनाथ वर-वंश जगत प्रदीप।
मेरे लिए करहुँ शान्ति सदा अनूप॥

इन्द्रवज्रा

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों यतिनायकों को।
राजा-प्रजा-राष्ट्र-सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन! शांति को दे॥

स्रग्धारा

होवै सारी प्रजा को सुख बलयुत हो, धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पै, तिल भर न रहें, व्याधियों का अंदेशा॥
होवे चोरी न जारी, सुसमय वरते, हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारैं जिनवर-वृष को, जो सदा सौख्यकारी॥

दोहा

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शांति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज॥

मन्दाक्रान्ता

शास्त्रों का हो पठन सुखदा, लाभ सत्संगति का।
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का॥
बोलूँ प्यारे वचन हित के आपका रूप ध्याऊँ।
तौ लौं सेऊँ चरण जिनके, मोक्ष जौ लौं न पाऊँ॥
तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तब लौं लीन रहौं प्रभु, जब लौं पाया न मुक्ति-पद मैंने॥
अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कछु कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणाकरि पुनि छुड़ाहु भव दुख से॥
हे जगबन्धु जिनेश्वर! पाऊँ तव चरण-शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी॥

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

विसर्जन पाठ

क्षमापना

दोहा

बिन जाने वा जान के, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पूरन होय॥१॥
पूजन-विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान्।
और विसर्जन हू नहीं, क्षमा करहुं भगवान॥२॥
मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव॥३॥
आये जो जो देवगण, पूजैं भक्ति-प्रमाण।
ते अब जावहुँ कृपा कर, अपने-अपने धाम॥४॥

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप एवं गवासन में बैठकर नमस्कार करें।)

श्री सुविधिनाथ जिन चालीसा

दोहा

सकल निकल परमातमा, अरु सकल मुनिराज।
चैत्य जिनालय धर्म श्रुत, प्रणमूँ निज हित काज॥
पुष्पदंत जिनचरण में, वंदन करूँ त्रिकाल।
तव गुण वर्णन कर लहूँ, तीन लोक का भाल॥

चौपाई

पुष्पदंत तुम शिवपुर कंता, तीर्थंकर नवमें भगवंता।
कर्म शत्रु को आप भगाया, रत्नत्रय शुभ मार्ग दिखाया॥1॥

तज अपराजित दिव्य विमाना, जयरामा उर गहे निधाना।
फागुन वदि नवमी शुभ आई, गर्भ कल्याणक खुशी छाई॥2॥
काकंदी नगरी सुविशाला, पितु सुग्रीव नृपति प्रतिपाला।
पन्द्रह माह रतन की वर्षा, वरसाकर सुरमण्डल हर्षा॥3॥
अगहन वदि एकम की घड़ियां, त्रिभुवन में फैली सुख मणियाँ।
चतुर निकायन सुरपति आये, झूमें नाचे मोद मनाये॥4॥
सहस अष्ट कलशों के द्वारा, बही न्हवन की निर्मल धारा।
किया शची ने प्रभु तन उवटन, इन्द्र पुनः लाये नृप आँगन॥5॥
आनंद नाटक सुर रचायो, ताण्डव रच जिन गुण को गायो।
अमृत सिंचन सुर ने कीनो, जिससे जिन तन बढ़ो नवीनो॥6॥
मगर चिह्न जिनपद सु निशानी, सहस्र अष्ट लक्षण कल्याणी।
धवल चन्द्र सम सुन्दर काया, जन्मत दस अतिशय मन भाया॥7॥
बहुत काल सुखमय यों बीता, भोगा वैभव परम पुनीता।
देखा उल्कापात गगन में, छोड़ा धन वैभव इक क्षण में॥8॥
जन्मतिथी तप विधि उपजाई, वन जाने तत्पर जिनराई।
वन में साल नाम का तरुवर, लीनी दीक्षा जहाँ दिगम्बर॥9॥
पंचमहाव्रत तुमने धारे, समिति पंच प्रकार संवारे।
धन्य प्रभू रत्नत्रय बाना, बिन बोले शिवपथ बतलाना॥10॥
पुनर्वसु नृप के घर आंगन, रत्न राशि का बरसा सावन।
प्रथम अहार किया मुनिवर ने, मुनि सुवृत्ति संवर्द्धन करने॥11॥
चार वर्ष दुर्धर तप कीना, शुक्ल ध्यान में हुये प्रवीना।
कर्म चौकड़ी घाति नशाये, नंत चतुष्टय तुम प्रकटाये॥12॥
कार्तिक धवल तृतीया उत्तम, पंचम ज्ञान हुआ परमोत्तम।
लोकालोक लखे दर्पणवत्, दर्शन-ज्ञान सु जिनका युगपत॥13॥
समवशरण में आप विराजे, सुर नर खग सब पूज रचावें।
सेवें अस्सी आठ गणेशा, नाग नाम जिनमें प्रथमेशा॥14॥

मुख्य अर्जिका गणिनी 'घोषा', जिनवाणी सुन हो संतोषा।
बुद्धवीर्य नृप रहे प्रधानी, सुनते जो वाणी कल्याणी॥15॥
समवशरण का अतिशय भारी, भूख प्यास ना हो बीमारी।
लाखों भविजन तुमने तारे, भव सागर से पार उतारे॥16॥
चतुर्दिशा से दिखते तव मुख, लख कर मिलता आतम का सुख।
राजे पद्म पुष्प सिंहासन, पुष्पदंत जिन हो पद्मासन॥17॥
लाखों वर्ष किया उपदेशा, एक मास जब रहता शेषा।
सम्मेदाचल पर तुम आए, सुप्रभ कूट सु ध्यान लगाये॥18॥
भाद्र शुक्ल अष्टम तिथि जानो, मुक्तिपुरी को किया प्रयाणो।
हुये निकल शाश्वत अविनाशी, प्रकटी आतम गुण की राशि॥19॥
तज इक शत धनु उच्च शरीरा, वसुविधि रहित भये अशरीरा।
द्विलख पूरब आयु सु पाई, सिद्धी वधु से करी सगाई॥20॥
मोक्ष मार्ग के हो तुम नेता, मम नैया के तुम ही त्रेता।
नाथ तनक ना देर लगाओ, मुझको भवदधि पार कराओ॥21॥
सुविधिनाथ पद धरलो निज चित, मुक्ति वधू वर लेती निश्चित।
तव पद में नित करता वंदन, मेटो प्रभो हमारा क्रंदन॥22॥
चहुँ ओर विषयों की हाला, लेलो जिन भक्ति का कुदाला।
जिनवाणी ही अमृतप्याला, पीकर के पाऊँ शिवशाला॥23॥
पतितों को प्रभु पार लगाते, तव भक्तों को अघ न सताते।
पुष्पदंत गुण जो भवि गाते, जगत पूज्य पावन बन जाते॥24॥

दोहा

सुविधि नाथ गुण नंत हैं, कैसे करूँ बखान।
अल्पबोध से ही करूँ, भक्ति सु वश गुणगान।
जो भवि चालीसा पढ़े, श्रद्धा युत उर लाय।
उत्तम भव सुख भोगकर, वांछित शिव फल पाय॥

श्री सुविधिनाथ भगवान की आरती

ॐ जय पुष्पदंत देवा, स्वामी पुष्पदंत देवा।
शत इंद्रों से वंदित, भवसागर खेवा।।टेक।।
जय रामा माता के, उर में जब आए।
नृप सुग्रीव भवन में, रतन सुवर्षाये।।
ॐ जय .....।।1।।

काकन्दी नगरी की, शोभा मनभाई
माघ कृष्ण एकम् को, जनमें जिनराई।।
ॐ जय .....।।2।।

चन्द्रवर्ण शत धनु की, काया मनहारी।
मकर चिह्न पग सोहें, छवि शुभ अविकारी।।
ॐ जय .....।।3।।

भेष दिगम्बर धारा, पुष्पक वन आए।
तव गुण की शुभ संस्तुति, लौकान्तिक गाए।।
ॐ जय .....।।4।।

तप वैराग्य खड्ग से, अरि रज रहस नशे।
समवशरण में अघहर, केवल ज्योति लसे।।
ॐ जय .....।।5।।

गिरी सम्मेद शिखर से, लोक शिखर पाया।
वसुविध विधि विनशाके, शिव वधु परिणाया।।
ॐ जय .....।।6।।

नित तव पद पुष्पों में, रतनन दीप जलें।
वसुनंदी गुण पाकर, शाश्वत सौख्य वरें।।
ॐ जय .....।।7।।

निर्वाणकांड (भाषा)

–कवि श्री भैया भगवतीदास जी

दोहा

वीतराग वंदौं सदा, भावसहित सिरनाय।
कहौं कांड-निर्वाण की, भाषा-सुगम बनाय॥1॥

चौपाई छंद

'अष्टापद' आदीश्वर स्वामि, वासुपूज्य 'चंपापुरि' नामि।
नेमिनाथ स्वामी 'गिरनार', वंदौ भाव-भगति उर-धार॥2॥
चरम-तीर्थंकर चरम-शरीर, 'पावापुरि' स्वामी-महावीर।
'शिखर-सम्मेद' जिनेश्वर बीस, भाव-सहित वंदौं निश-दीस॥3॥
वरदत्तराय रु इंद्र मुनिंद्र, सायरदत्त आदि गुणवृंद।
'नग सु तारवर' मुनि उठकोड़ि, वंदौं भाव-सहित कर-जोड़ि॥4॥
श्री 'गिरनार'-शिखर विख्यात, कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात।
शम्भु-प्रद्युम्न कुमर द्वय भाय, अनिरुद्ध आदि नमूँ तसु पाय॥5॥
रामचंद्र के सुत द्वय वीर, लाड-नरिंद आदि गुणधीर।
पाँच कोड़ि मुनि मुक्ति-मँझार, 'पावागढ़' वंदौं निरधार॥6॥
पांडव-तीन द्रविड़-राजान, आठ कोड़ि मुनि मुकति पयान।
श्री 'शत्रुंजय-गिरि' के सीस, भाव-सहित वंदौं निश-दीस॥7॥
जे बलभद्र मुकति में गये, आठ कोड़ि मुनि औरहु भये।
श्री 'गजपंथ' शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूँ तिहुँकाल॥8॥
राम हनू सुग्रीव सुडील, गवय गवाख्य नील महानील।
कोड़ि निन्याणवे मुक्ति पयान, 'तुंगीगिरि' वंदौं धरि ध्यान॥9॥
नंग-अनंगकुमार सुजान, पाँच कोड़ि अरु अर्ध प्रमान।
मुक्ति गये 'सोनागिरि' शीश, ते वंदौं त्रिभुवनपति ईश॥10॥

रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये 'रेवा-तट' सार।
कोटि पंच अरु लाख पचास, ते वंदौं धरि परम-हुलास॥11॥
रेवानदी 'सिद्धवर-कूट', पश्चिम-दिशा देह जहँ छूट।
द्वय-चक्री दश-कामकुमार, उठकोड़ि वंदौं भव-पार॥12॥
'बड़वानी' बड़नयर सुचंग, दक्षिण-दिशि 'गिरि-चूल' उतंग।
इंद्रजीत अरु कुंभ जु कर्ण, ते वंदौं भवसायर-तर्ण॥13॥
सुवरणभद्र आदि मुनि चार, 'पावागिरिवर' शिखर-मँझार।
चेलना-नदी-तीर के पास, मुक्ति गये वंदौं नित तास॥14॥
फलहोड़ी बड़गाम अनूप, पश्चिम-दिशा 'द्रोणगिरि' रूप।
गुरुदत्तादि-मुनीश्वर जहाँ, मुक्ति गये वंदौं नित तहाँ॥15॥
बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय।
श्री 'अष्टापद' मुक्ति-मँझार, ते वंदौं नित सुरत-संभार॥16॥
अचलापुर की दिश ईसान, तहाँ 'मेंढ़गिरि' नाम प्रधान।
साढ़े तीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूँ चित-लाय॥17॥
वंसस्थल-वन के ढिंग होय, पच्छिम-दिशा 'कुंथुगिरि' सोय।
कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूँ प्रणाम॥18॥
जसरथ-राजा के सुत कहे, देश कलिंग पाँच सौ लहे।
'कोटिशिला' मुनि कोटि-प्रमान, वंदन करूँ जोड़ जुग पान॥19॥
समवसरण श्री पार्श्व-जिनंद, 'रेसिंदीगिरि' नयनानंद।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वंदौं नित धरम-जिहाज॥20॥
'मथुरापुरी' पवित्र-उद्यान, जम्बूस्वामी जी निर्वाण।
चरम-केवली पंचमकाल, ते वंदौं नित दीनदयाल॥21॥
तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित-प्रति वंदन कीजे तहाँ।
मन-वच-काय सहित सिरनाय, वंदन करहिं भविक गुणगाय॥22॥
संवत सतरह-सौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
'भैया' वंदन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाणकांड गुणमाल॥23॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

श्री सुविधिनाथ जिन स्तवन

(उपजाति छन्दः)

एकान्तदृष्टि-प्रतिषेध तत्त्वं,
प्रमाण-सिद्धं तदतत्-स्वभावम्।
त्वया प्रणीतं सुविधे! स्वधाम्ना,
नैतत्समालीढ-पदं त्वदन्यैः॥1॥

अन्वयार्थः (सुविधे) हे सुविधिनाथ भगवन्! **(त्वया)** आपके द्वारा **(स्वधाम्ना)** अपने ज्ञानरूप तेज से **(प्रणीतं)** प्रतिपादित **(तत्त्वं)** जीवादि पदार्थ **(एकान्तदृष्टिप्रतिषेध)** एकान्त दर्शन का निषेध करने वाला है **(प्रमाणसिद्धं)** प्रत्यक्ष प्रमाणों से सिद्ध है तथा **(तदतत्स्वभावम्)** तत् और अतत् स्वभाव के लिए है अर्थात विधि निषेध रूप है। हे भगवन् **(एतत्)** वह तत्त्व **(त्वदन्यैः)** आपसे भिन्न सुगत आदि के द्वारा **(समालीढपदं न)** अनुभूत स्थान वाला नहीं है, सुगतादि के द्वारा ऐसा तत्त्व प्रतिपादित नहीं हो सकता है।

भावार्थ–हे सुविधिनाथ भगवन्! आपके द्वारा अपने ज्ञानरूप तेज से प्रतिपादित जीवादि पदार्थ एकान्त दर्शन का निषेध करने वाला है प्रत्यक्ष प्रमाणों से सिद्ध है तथा तत् और अतत् स्वभाव के लिए है अर्थात विधि निषेध रूप है। हे भगवन्! वह तत्त्व आपसे भिन्न सुगत आदि के द्व ारा अनुभूत स्थान वाला नहीं है, सुगतादि के द्वारा ऐसा तत्त्व प्रतिपादित नहीं हो सका है।

तदेव च स्यान्न तदेव च स्यात्
तथाप्रतीतेस्तव तत्कथञ्चित्।
नात्यन्त-मन्यत्व-मनन्यता च
विधिर्निषेधस्य च शून्य-दोषात्॥2॥

अन्वयार्थः हे सुविधिनाथ जिनेन्द्र! **(तव)** आपका **(तत्)** वह तत्त्व **(कथञ्चित्)** किसी अपेक्षा से **(तदेव न स्यात्)** तद्रूप नहीं है

क्योंकि (**तथा प्रतीतेः**) उस प्रकार की प्रतीति होती है (**विधेः**) विधि (**च**) और (**निषेधस्य**) निषेध में (**अत्यन्तं**) सर्वथा (**न अन्यत्वम्**) न भिन्नता है (**च**) और (**न अनन्यता**) न अभिन्नता है क्योंकि ऐसा मानने से (**शून्यदोषात्**) शून्यता का दोष लगता है।

भावार्थ–हे सुविधिनाथ जिनेन्द्र! आपका वह तत्त्व किसी अपेक्षा से तद्रूप नहीं है और किसी अपेक्षा से तद्रूप नहीं है क्योंकि उस प्रकार की प्रतीति होती है विधि और निषेध में सर्वथा न भिन्नता है और न अभिन्नता है क्योंकि ऐसा मानने से शून्यता का दोष आता है।

नित्यं तदेवेदमिति प्रतीते-

र्न नित्यमन्यत्-प्रतिपत्ति-सिद्धेः।

न तद्विरुद्धं बहिरन्तरंग-,

निमित्त-नैमित्तिक-योगतस्ते॥3॥

अन्वयार्थः हे भगवन्! (**इदं तदेव**) यह वही है (**इति**) इस प्रकार (**प्रतीतेः**) प्रतीति होने से तत्त्व (**नित्यं**) नित्य है और (**अन्यत्प्रतिपत्तिसिद्धेः**) वह अन्य है इस प्रकार प्रतीति होने से (**नित्यं न**) नित्य नहीं है तथा (**ते**) आपके मत में (**बहिरन्तरंग**) बहिरंग व अन्तरंग (**निमित्त**) कारण और (**नैमित्तिक**) कार्य के (**योगतः**) योग से (**तद्**) वह नित्यानित्यात्म तत्त्व (**विरुद्धं न**) विरुद्ध भी नहीं है।

भावार्थ– हे भगवन्! यह वही है इस प्रकार प्रतीति होने से तत्त्व नित्य है और वह अन्य है इस प्रकार प्रतीति होने से नित्य नहीं है तथा आपके मत में बहिरंग व अन्तरंग कारण और कार्य के योग से वह नित्यानित्यात्म तत्त्व विरुद्ध भी नहीं है।

अनेकमेकं च पदस्य वाच्यं,

वृक्षा इति प्रतययवत् प्रकृत्या।

आकाङ्क्षिणः स्यादिति वै निपातो,

गुणान-पेक्षे नियमेऽपवादः॥4॥

अन्वयार्थः हे भगवन्! (**पदस्य**) सुबन्त तिडन्त रूप शब्द का (**वाच्यं**) अभिधेय-प्रतिपाद्य विषय (**प्रकृत्या**) स्वभाव से ही

(वृक्षा इति प्रत्ययवत्) वृक्ष इस ज्ञान की तरह **(अनेकं)** अनेक **(च)** और **(एकं)** एक दोनों रूप होता है। **(आकाङ्क्षिणः)** विरोधी धर्म के प्रतिपादन की इच्छा रखने वाले पुरुष के **(स्यात् इति निपातः)** कथञ्चित् अर्थ का प्रतिपादक स्यात् यह शब्द **(गुणानपेक्षे)** गौण अर्थ की अपेक्षा न रखने वाले **(नियमे)** सर्वथा एकान्त रूप कथन में **(वै)** निश्चय से **(अपवादः)** बाधक है।

भावार्थ– हे भगवन्! सुबन्ततिङन्त रूपशब्द का अभिधेय- प्रतिपाद्य विषय स्वभाव से ही वृक्ष इस ज्ञान की तरह अनेक और एक दोनों रूप होता है। विरोधी धर्म के प्रतिपादन की इच्छा रखने वाले पुरुष के कथञ्चित् अर्थ का प्रतिपादक स्यात् यह शब्द गौण अर्थ की अपेक्षा न रखने वाले सर्वथा एकान्त रूप कथन में निश्चय से बाधक है।

गुण-प्रधानार्थमिदं हि वाक्यं,
जिनस्य ते त्वद् द्विषतामपथ्यम्।
ततोऽभिवन्द्यं जगदीश्वराणां,
ममापि साधोस्तव पादपद्मम्॥॥5॥

अन्वयार्थः हे भगवन्! **(जिनस्य)** कर्म रूप शत्रुओं को जीतने वाले **(ते)** आपका **(इदम्)** यह जो **(गुणप्रधानार्थम्)** गौण और प्रधान अर्थ से युक्त **(वाक्यं)** वाक्य है **(तद्)** वह **(हि)** निश्चय से **(द्विषताम्)** द्वेष रखने वाले सर्वथा एकान्तवादियों के लिए **(अपथ्यम्)** अनिष्ट है **(ततः)** इसलिए **(साधोः)** समस्त कर्मों का क्षय करने के लिए प्रयत्नशील **(तव)** आपके **(पादपद्मं)** चरणकमल **(जगदीश्वराणां)** तीनों जगत् के स्वामी इन्द्र चक्रवर्ती तथा धरणेन्द्र के और **(ममापि)** मुझ समन्तभद्र के भी **(अभिवन्द्यं)** वन्दनीय हैं।

भावार्थ– हे भगवन्! कर्म रूप शत्रुओं को जीतने वाला आपका यह जो गौण और प्रधान अर्थ से युक्त वाक्य है वह निश्चय से द्वेष रखने वाले सर्वथा एकान्तवादियों के लिए अनिष्ट है। इसलिए समस्त कर्मों का क्षय करने के लिए प्रयत्नशील आपके चरणकमल तीनों जगत् के स्वामी इन्द्र चक्रवर्ती तथा धरणेन्द्र के और मुझ समन्तभद्र के लिए भी वन्दनीय हैं।

श्री सुविधिनाथ भगवान का जीवन परिचय

वंश	–	इक्ष्वाकु
माता का नाम	–	जयरामा (रामा)
पिता का नाम	–	श्री सुग्रीव
जन्मस्थली	–	काकंदी
चिन्ह	–	मगर
वर्ण	–	धवल आभा युक्त
आयु	–	2 लाख पूर्व
अवगाहना	–	100 धनुष
गर्भ कल्याण तिथि	–	फाल्गुन कृ० 9
गर्भ कल्याण नक्षत्र	–	मूल
जन्म कल्याण तिथि	–	मार्ग शुक्ल 1
जन्म कल्याण नक्षत्र	–	मूल
तप कल्याण तिथि	–	मार्ग शुक्ल 1/पौष शु. 11
तप कल्याण नक्षत्र	–	अनुराधा
केवलज्ञान कल्याण तिथि	–	कार्तिक शुक्ल 3रु2
केवलज्ञान कल्याण नक्षत्र	–	मूल
मोक्ष कल्याण तिथि	–	आश्विन शुक्ल 8/भाद्र शु. 8
मोक्ष कल्याण नक्षत्र	–	मूल
मोक्ष स्थली	–	सम्मेद शिखर जी
मोक्ष कूट	–	सुप्रभ कूट
वैराग्य का कारण	–	उल्कापात

यक्ष	–	ब्रह्म
यक्षिणी	–	काली
दीक्षा वन	–	पुष्पक
दीक्षा वृक्ष	–	साल/नाग
सहदीक्षित	–	1000
छद्मस्थ काल	–	4 वर्ष/4 माह
सर्व ऋषि	–	2 लाख
सर्व आर्यिका	–	3 लाख 80 हजार
कुल गणधर	–	88
मुख्य गणधर	–	नाग (अनगार) वैदर्भ
मुख्य श्रोता	–	बुद्धिवीर्य
मुख्य आर्यिका	–	घोषा/घोषार्या
प्रथम आहारदाता	–	पुनर्वसु
कुल श्रावक	–	2 लाख
कुल श्राविका	–	4 लाख/5 लाख
केवलीकाल	–	1 लाख पूर्व -(28 पूर्वांग 4 वर्ष/मास)
तीर्थंकाल	–	(9 को.सा. 1/4 पल्य) + (1 लाख पूर्व-28 पूर्वांग)
देवगति से पूर्व भव का नाम	–	महापद्म/पद्म
पूर्वभव में पिता का नाम	–	श्री सर्वजनानंद (मूर्तिहित)/उभयानंद
इनके तीर्थकाल के कामदेव	–	वत्सराज
कामदेव का मोक्ष	–	सिद्धवरकूट

परम्पराचार्य अर्घावली

वीतराग जिनगिरि से निसृत द्वादशांग जिनवर वाणी,
गणधर सूरी ज्ञान कुण्ड से झरती पीते भवि प्राणी।
मुनिराजों ने जिन्हें स्वयं ही शब्दों में लिपिबद्ध किया,
प्रथम चरण अरु करण द्रव्य को अर्घ चढ़ा हम नमन किया।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव द्वादशांग मय सरस्वती देव्यैः नमः अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उन आचार्यों के चरणों में, झुका रहे अपना माथा।
जिनकी अमृतवाणी सुनकर, हो जाता निज से नाता।।
षट्खण्डागम आदि सिद्धांतों, को जिनने लिपिबद्ध किया।
पुष्पदंत, धरसेन, भूतबली आचार्यों से ज्ञान लिया।।

ॐ ह्रूँ परमपूज्य आचार्य भगवन् श्री-धरसेन-पुष्पदंत-भूतबलि परमेष्ठिभ्यो अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आध्यात्मरसिक सिद्धान्त मनीषी आगम के मर्मज्ञ महान,
परम तपस्वी अविचल ध्यानी निजानंद करते रसपान।
निज आतम कल्याणहेतु हम करते पूजन अरु गुणगान,
कुंद कुंद आचार्य श्री को नमन करूँ जो हैं भगवान।।

ॐ ह्रूँ परमपूज्य आध्यात्मरसिक आचार्य भगवान् श्री कुंदकुंद स्वामिने अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

परम तपस्वी शांति सिंधु मुनि पंचम युग में तीर्थ समान,
तीर्थंकर वत् कलिकाल में जिनशासन का कर यशगान।
चक्रवती चारित्र शिरोमणि भव्यों को सत्यार्थ प्रमाण,
तीन भक्ति युत अर्घ चढ़ाऊँ पाने को समकित वरदान।।

ॐ ह्रूँ प.पू. चारित्र चक्रवर्ती आचार्य भगवन् श्री शांतिसागरजी मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भव तन भोग विरागी हे गुरु ज्ञान ध्यान तप लीन महान,
विषय वासना अरु कषाय से रिक्त चित्त जिनका अमलान।
पायसिन्धु को पाकर हम सब शिवमग पावें विषय नशाय,
ऐसे उत्तम मुनिपद पंकज अर्घ चढ़ाकर शीश नवाय॥

ॐ ह्रूँ परमपूज्य परम तपस्वी आचार्य भगवन् श्री पायसागर मुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्ष विजेता मन के जेता सूरीवर जयकीर्ति प्रधान,
निर्विकल्प शुभ ध्यान पायकर पाया निज आतम का ज्ञान।
भाव सहित गुरु भक्ति पूजा करती पाप कर्म की हान,
जल फलादि वसु अर्घ चढ़ाकर पाएं हम भी उत्तम ज्ञान॥

ॐ ह्रूँ परमपूज्य आध्यात्म योगी आचार्य भगवन् श्री जयकीर्ति मुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिराजों में आप प्रमुख हैं सूरीवर जो कहलाते,
भारत गौरव जिनवृष सौरभ मार्ग धर्म का बतलाते॥
रत्नत्रय से आप विभूषित गुरू देश भूषण स्वामी,
भक्तियुत शुभ अर्घ चढ़ाकर बन जाऊँ मैं निष्कामी॥

ॐ ह्रूं परमपूज्य भारतगौरव आचार्य भगवन् श्री देशभूषण मुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक वसु द्रव्य मिलाकर कंचन थाल भराये हैं,
निज आतम के वसु गुण पाने तव पद आज चढ़ाये हैं।
राष्ट्रसंत विद्यानंद सूरि, प्राणीमात्र हितकारी हो,
सिद्ध-शास्त्र-आचार्य भक्ति युत नित प्रति धोक हमारी हो॥

ॐ ह्रूँ परमपूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

परम पूज्य राष्ट्र संत सिद्धांत चक्रवर्ती

श्वेतपिच्छीधाराकाचार्य

श्री विद्यानंद जी मुनिराज की पूजन

स्थापना

(छंद-चउबोला)

श्री जिनशासन के उन्नायक, धर्म प्रभावक हैं ज्ञानी।
स्व-पर हितैषी संयम साधक, रत्नत्रय निधि के दानी॥
विश्व पटल पर धर्म सूर्य, सिद्धांत चक्रवर्ती प्यारे।
श्वेतपिच्छिधारी सूरिवर, विद्यानंद जग में न्यारे॥
भाव भक्तिवश आह्वानन कर, हृदय कमल बिठलाऊँगा।
भव सागर तिरने को गुरुवर, तेरी पूज रचाऊँगा।
तव चरणों की भक्ति संस्तुति, अर्चन वंदन सुखकारी
भाव सहित हम तुम्हें बुलाते, आ जाओ हे अविकारी॥

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनींद्र! अत्र अवतर अवतर तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनींद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक

(छंद-चउबोला)

जल

क्षीरोदधि का निर्मल जल ले, तव चरणों में धार करूँ।
जन्म जरा मृतु नाश करन को, तव गुण नित्य विचार करूँ॥
राष्ट्रसंत विद्यानंद सूरि, प्राणिमात्र हितकारी हो।
सिद्ध शास्त्र आचार्य भक्तियुत, नित प्रति धोक हमारी हो॥

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनींद्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन

भवाताप से तपा हुआ हूँ, नहीं शांति सुख की छाया।
शाश्वत शांति पाऊँ अतः अब, चंदन तव पद में लाया॥

राष्ट्रसंत विद्यानंद सूरि, प्राणिमात्र हितकारी हो।
सिद्ध शास्त्र आचार्य भक्तियुत, नित प्रति धोक हमारी हो।।

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनींद्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

क्षण विध्वंसी पद को पाकर, मान भाव से चूर रहा।
तव पद तंदुल धवल चढ़ाकर, अक्षय सुख भरपूर रहा।।
राष्ट्रसंत विद्यानंद सूरि, प्राणिमात्र हितकारी हो।
सिद्ध शास्त्र आचार्य भक्तियुत, नित प्रति धोक हमारी हो।।

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनींद्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

कामवासना से दूषित मन, भव-भव भ्रमण कराता है।
परम ब्रह्म को पाता है वो, जो पद पुष्प चढ़ाता है।।
राष्ट्रसंत विद्यानंद सूरि, प्राणिमात्र हितकारी हो।
सिद्ध शास्त्र आचार्य भक्तियुत, नित प्रति धोक हमारी हो।।

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनीन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

जग के सब खाद्यान्न पदारथ, क्षुधा नाश ना कर पाते।
क्षुधा वेदनी नाश करन को, चरुवर गुरु पद में लाते।।
राष्ट्रसंत विद्यानंद सूरि, प्राणिमात्र हितकारी हो।
सिद्ध शास्त्र आचार्य भक्तियुत, नित प्रति धोक हमारी हो।।

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

लौकिक दीपक नश्वर जग के, किंचित तम को हरता है।
तव पद में ये अर्पण कर दूँ, चित आलौकित होता है।।
राष्ट्रसंत विद्यानंद सूरि, प्राणिमात्र हितकारी हो।
सिद्ध शास्त्र आचार्य भक्तियुत, नित प्रति धोक हमारी हो।।

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी

मुनीन्द्राय मोहान्धकाराय-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

धूप दशांगी क्षणभर को ही, तृप्त नासिका करती है।
तव पद सम्मुख अगनी खेऊँ, कर्म कालिमा हरती है॥
राष्ट्रसंत विद्यानंद सूरि, प्राणिमात्र हितकारी हो।
सिद्ध शास्त्र आचार्य भक्तियुत, नित प्रति धोक हमारी हो॥

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनीन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

जग के सारे फल भक्षण कर, नर जीवन ना सफल कहा।
गुरु पद आगे फल भेटूँ तो, मोक्ष महाफल मिले अहा॥
राष्ट्रसंत विद्यानंद सूरि, प्राणिमात्र हितकारी हो।
सिद्ध शास्त्र आचार्य भक्तियुत, नित प्रति धोक हमारी हो॥

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनीन्द्राय महामोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ

नीरादिक वसु द्रव्य मिलाकर, कंचन थाल भराये हैं।
निज आतम के वसु गुण पाने, तव पद आज चढ़ाये हैं॥
राष्ट्रसंत विद्यानंद सूरि, प्राणिमात्र हितकारी हो।
सिद्ध शास्त्र आचार्य भक्तियुत, नित प्रति धोक हमारी हो॥

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

''राष्ट्रसंत गुरुदेव तुम, विद्यानंद मुनीश।
तव गुण निधि मैं पा सकूँ, धरूँ चरण में शीश॥''

चौपाई छंद

जय श्री विद्यानंद मुनीशा, मम श्रद्धा में तुम तीर्थेशा।
विषय कषाय वासना छोड़ी, माया की डोरी तुम तोड़ी॥
मोक्षमार्ग से नाता जोड़ा, सकल परिग्रह तुमने छोड़ा।
ग्रंथ रहित तुम हो निर्ग्रंथी, निज साधक तुम हो शिवपंथी॥1॥

कल्लप्पा के राजदुलारे, माँ सरस्वती के अति प्यारे।
नाम सुरेन्द्र आपने पाया, भववर्धन सब राग हटाया।।2।।
बीस वर्ष में बनकर त्यागी, क्षुल्लक बने हुए वैरागी।
महावीर कीर्ति गुरू ध्याया, पार्श्वकीर्ति शुभ नाम सु पाया।।3।।
सत्रह वर्ष रहे क्षुल्लक तुम, किया अध्ययन तब सर्वोत्तम।
सन तिरेसठ में बने मुनीशा, गुरू देशभूषण सूरीशा।।4।।
विद्यानंद नाम तुम पाया, आतम वैभव को दर्शाया।
रतनत्रय पा गहन साधना, निशदिन करते जिनाराधना।।5।।
सिद्धप्रभु का ध्यान लगाते, आत्मसिंधु में मोद मनाते।
पाठक पदवी गुरु सेवा कर, श्रुत लेखन करते हर्षा कर।।6।।
शास्त्र अनेकों आप लिखे हैं, जिनमें अनुपम सूत्र दिए हैं।
एलाचार्य की पदवी पाई, दिल्ली की जनता हर्षाई।।7।।
गोमटेश अभिषेक कराया, सहस्राब्दि उत्सव यश गाया।
पच्चिस सौवाँ निर्वाणोत्सव, वीर प्रभू का शुभ्र महोत्सव।।8।।
महावीर जी का वह मेला, सहस्राब्दि में रहा अकेला।
महरौली में वीर बिम्ब जिन, भव्य सहस्रों पूजें निशदिन।।9।।
कुंद कुंद भारति मनभावन, निशदिन बरसे ज्ञान का सावन।
कार्य सहस्रों करि तुम अनुपम, जिन वृष का फहराया परचम।।10।।
भक्त शिष्य तव संस्तुति गावें, निश्चित शिव पथ को वे पावें।
वसु वसुधा अरु वसु गुण पाने, पूजें हम वसु कर्म नशाने।।11।।

दोहा

विद्यानंद गुरुदेव को, प्रणमूँ नित्य त्रिकाल।
श्रद्धा से उर धार कर, नशूँ कर्मजंजाल।।

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्तचक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनीन्द्राय नमः अनर्घ-पद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

वसुधा से ले द्रव्य वसु, पूजूँ मैं वसुयाम।
बसूँ सदा तव चरण में, प्रतिपल करूँ प्रणाम।।

'इत्याशीर्वाद''

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

परम पूज्य राष्ट्रसंत सिद्धांत चक्रवर्ती श्वेतपिच्छाचार्य

श्री विद्यानंद जी मुनिराज की आरती

(लेखक : मुनि प्रज्ञानंद)

(तर्ज–वीराऽऽ, वीरा महावीरा स्वामी)

गुरुवर, गुरुवर, विद्यानंद न्यारे, जिनशासन के ध्रुव तारे।
जगमग उतारुँ थारी आरती,
हो गुरुवर, हम सब उतारें तेरी आरती।।टेक।।
मात सरस्वती के सुत प्यारे, कल्पप्पा पितु थारे।
शेडवाल की माटी पावन, जहाँ सुरेन्द्र अवतारे।।
गुरुवर, दक्षिण के सूर्य निराले, दश दिश कीने उजियारे।
जगमग उतारुँ थारी आरती।।।1।।

भेष दिगम्बर धारके गुरुवर, चले मुक्ति को वरने।
गुरू देशभूषण नौका पर, लगे भवोदधि तरने।।
गुरुवर, संयम का लेके सहारा, मोहादिक को संहारा।
जगमग उतारुँ थारी आरती।।।2।।

राष्ट्रसंत सिद्धांत चक्रवर्ती गुरुवर महाज्ञानी।
बाल ब्रह्मचारी इस युग में, गौरव गाथा न्यारी।।
गुरुवर, गिरतों को तुमने संभाला, जप कर तब नाम की माला।
जगमग उतारुँ थारी आरती।।।3।।

लखके उत्तम समाधि तुमरी, हुआ जगत आकर्षण
वसुनंदी के रूप में, अब हम, पायेंगे तब दर्शन।।
गुरुवर, जिनवृष के हो तुम सूरी, क्षपक शिरोमणी सूरी।
जगमग उतारुँ थारी आरती।।।4।।

श्री सुविधिनाथ विधान मांडना

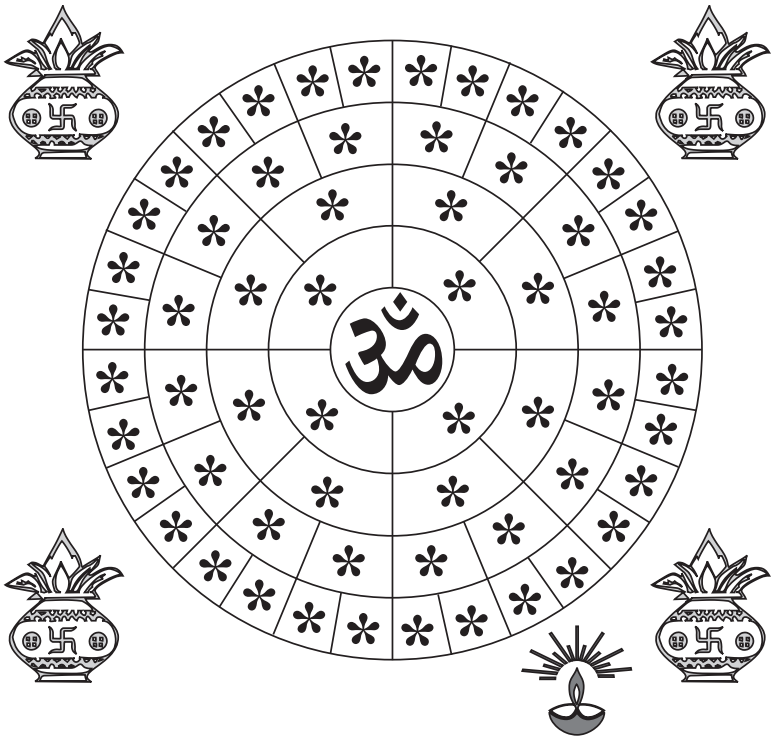

परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री 108

वसुनंदी जी मुनिराज द्वारा

रचित व संपादित साहित्य

मौलिक कृतियाँ

प्राकृत साहित्य

1. प्राकृत वाणी भाग-1, 2, 3
2. अहिंसगाहारो (अहिंसक आहार)
3. अज्ज-सक्किदी (आर्य संस्कृति)
4. अणुवेक्खा-सारो (अनुप्रेक्षा सार)
5. जिणवर-थोत्तं (जिनवर स्तोत्र)
6. जदि-किदि-कम्मं (यति कृतिकर्म)
7. णंदिणंद-सुत्तं (नंदीनंद सूत्र)
8. णिग्गंथ-थुदी (निर्ग्रन्थ स्तुति)
9. तच्चसारो (तत्त्व सार)
10. धम्म-सुत्तं (धर्म सूत्र)
11. रट्ठ-संति-महाजण्णो (राष्ट्र शांति महायज्ञ)
12. सुद्धप्पा (शुद्धात्मा)
13. अप्पणिब्भर भारदो (आत्मनिर्भर भारत)
14. विज्जा-वसु-सावयायारो (विद्या वसु श्रावकाचार)
15. अप्प-विहवो (आत्म वैभव)
16. अट्ठंग जोगो (अष्टांग योग)
17. णमोयार महप्पुरो (णमोकार माहात्म्य)
18. मूल-वण्णो (मूल वर्ण)
19. मंगल-सुत्तं (मंगल सूत्र)
20. विस्स-धम्मो (विश्व धर्म)
21. विस्स-पुज्जो-दियंबरो (विश्व पूज्य दिगम्बर)
22. समवसरण सोहा (समवशरण शोभा)
23. वयण-पमाणत्तं (वचन प्रमाणत्व)
24. अप्पसत्ती (आत्म शक्ति)
25. कला-विण्णाणं (कला विज्ञान)
26. को विवेगी (विवेकी कौन)
27. पुण्णासव-णिलयो (पुण्यास्रव निलय)
28. तित्थयर-णामत्थुदी (तीर्थंकर नाम स्तुति)
29. रयणकंडो (सूक्ति कोश)
30. धम्म-सुत्ति-संगहो (धर्म सूक्ति संग्रह)
31. कम्म-सहावो (कर्म स्वभाव)
32. खवगराय सिरोमणी (क्षपकराज शिरोमणि)
33. सिरि सीयलणाह चरियं (श्री शीतलनाथ चरित्र)
34. अज्झप्प-सुत्ताणि (अध्यात्म सूत्र)
35. समणायारो (श्रमणाचार)

भावार्थ

1. अज्ज-सक्किदी (आर्य संस्कृति)
2. णिग्गंथ-थुदि (निर्ग्रंथ स्तुति)
3. तच्च-सारो (तत्त्वसार)
4. रट्ठसंति-महाजण्णो (राष्ट्रशांति महायज्ञ)
5. णंदिणंद-सुत्तं (नंदीनंद सूत्र)
6. अज्झप्प-सुत्ताणि (अध्यात्म सूत्र)

टीका ग्रंथ

1. प्रमेया टीका-रत्नमाला (संस्कृत)
2. वसुधा टीका-द्रव्यसंग्रह (संस्कृत)
3. नय प्रबोधिनी-आलाप पद्धति (हिंदी)

इंग्लिश साहित्य

Inspirational Tales Part- 1 & 2

वाचना साहित्य

1. मुक्ति का वाग्दान (इष्टोपदेश)
2. बोधि वृक्ष (प्रश्नोत्तर रत्नमालिका)
3. शिवपथ का रथ (सामायिक पाठ)
4. स्वात्मोपलब्धि (समाधि तंत्र)

प्रवचन साहित्य

1. आईना मेरे देश का
2. उत्तम क्षमा धर्म (आत्मा का ए.सी. रूम)
3. उत्तम आर्जव धर्म (रंचक दगा बहुत दुःखदानी)
4. उत्तम मार्दव धर्म (मान महाविष रूप)
5. उत्तम शौच धर्म (लोभ पाप का बाप बखाना)
6. उत्तम सत्य धर्म (सतवादी जग में सुखी)
7. उत्तम संयम धर्म (जिस बिना नहिं जिनराज सीझे)
8. उत्तम तप धर्म (तप चाहे सुरराय)
9. उत्तम त्याग धर्म (निज हाथ दीजे साथ लीजे)
10. उत्तम आकिंचन धर्म (परिग्रह चिंता दुःख ही मानो)
11. उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म (चेतना का भोग)
12. खुशी के आँसू
13. खोज क्यों रोज-रोज
14. गुरुत्तं भाग 1-15
15. चूको मत
16. जय बजरंगबली
17. जीवन का सहारा
18. ठहरो! ऐसे चलो
19. तैयारी जीत की
20. दशामृत
21. धर्म की महिमा
22. ना मिटना बुरा है न पिटना
23. नारी का धवल पक्ष
24. शायद यही सच है
25. श्रुत निर्झरी
26. सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य की शौर्य गाथा
27. सीप का मोती (महावीर जयंती)
28. स्वाती की बूँद

हिंदी गद्य रचना

1. अन्तर्यात्रा
2. अच्छी बातें
3. आज का निर्णय
4. आ जाओ प्रकृति की गोद में
5. आधुनिक समस्यायें प्रमाणिक समाधान
6. आहारदान
7. एक हजार आठ
8. कलम पट्टी बुद्धिका
9. गागर में सागर
10. गुरु कृपा
11. गुरुवर तेरा साथ
12. जिन सिद्धांत महोदधि
13. डॉक्टरों से मुक्ति
14. दान के अचिन्त्य प्रभाव
15. धर्म बोध संस्कार (भाग 1-4)
16. धर्म संस्कार (भाग 1-2)
17. निज अवलोकन
18. वसु विचार
19. वसुनन्दी उवाच
20. मीठे प्रवचन (भाग 1-6)
21. रोहिणी व्रत कथा
22. स्वप्न विचार
23. सद्गुरु की सीख
24. सफलता के सूत्र
25. सर्वोदयी नैतिक धर्म
26. संस्कारादित्य
27. हमारे आदर्श

हिंदी काव्य रचना

1. अक्षरातीत
2. कल्याणी
3. चैन की जिंदगी
4. ना मैं चुप हूँ ना गाता हूँ
5. मुक्ति दूत के मुक्तक
6. हाइकू
7. हीरों का खजाना

विधान रचना

1. कल्याण मंदिर विधान
2. कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान
3. चौसठऋद्धि विधान
4. णमोकार महार्चना
5. दुःखों से मुक्ति (बृहद् सहस्रनाम महार्चना)
6. यागमंडल विधान
7. समवशरण महार्चना
8. श्री नंदीश्वर विधान
9. श्री सम्मेदशिखर विधान
10. श्री अजितनाथ विधान
11. श्री संभवनाथ विधान
12. श्री पद्मप्रभ विधान
13. श्री चंद्रप्रभ विधान (देहरा तिजारा)
14. श्री चंद्रप्रभ विधान
15. श्री पुष्पदंत विधान
16. श्री शांतिनाथ विधान
17. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
18. श्री नेमिनाथ विधान
19. श्री महावीर विधान
20. श्री जम्बूस्वामी विधान
21. श्री भक्तामर विधान
22. श्री सर्वतोभद्र महार्चना

संपादित कृतियाँ (संस्कृत प्राकृत साहित्य

1. आराधना सार (श्रीमद्देवसेनाचार्य जी)
2. आराधना समुच्चय (श्री रविचन्द्राचा
3. आध्यात्म तरंगिणी (आचार्य सोमदेव सूरी जी)
4. कर्म विपाक (आ. श्री सकलकीर्ति ज
5. कर्म प्रकृति (सिद्धांत चक्रवर्ती आ. श्री अभयचंद्र जी)
6. गुणरत्नाकर (रत्नकरण्ड श्रावकाचार) (आ. श्री समंतभद्र स्वामी जी)
7. चार श्रावकाचार संग्रह
8. जिनकल्पि सूत्र (श्री प्रभाचंद्राचार्य ज
9. जिन श्रमण भारती (संकलन-भक्ति, स्तुति, ग्रंथादि)
10. जिन सहस्रनाम स्त्रोत
11. तत्त्वार्थ सार (श्री मदमृताचन्द्राचार्य सूरि)
12. तत्त्वार्थस्य संसिद्धि
13. तत्त्वार्थ सूत्र (आ. श्री उमास्वामी जी)
14. तत्त्वज्ञान तरंगिणी (श्री मद्भट्टारक ज्ञानभूषण जी)
15. तच्च वियारो सारो (आ. श्री वसुनंदी
16. तत्व भावना (आ. श्री अमितगति जी)
17. धर्म रत्नाकर (श्री जयसेनाचार्य जी)
18. धम्म रसायण (आ. श्री पद्मनंदी स्वामी जी)
19. ध्यान सूत्राणि (श्री माघनंदी सूरी)
20. नीतिसार समुच्चय (आ. श्री इंद्रनंदी स्वामी जी)
21. पंच विंशतिका (आ. श्री पद्मनंदी ज
22. प्रकृति समुत्कीर्तन (सिद्धांत चक्रवर्ती श्री नेमीचंद्राचार्य जी)
23 पंचरत्न
24. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय (आ. श्री अमृतचंद्र स्वामी जी)
25. मरणकण्डिका (आ. श्री अमितगति
26. भगवती आराधना (आ. श्री शिवकोटी जी स्वामी)
27. भावत्रयफलप्रदर्शी (आ. श्री कुंथुसा
28. मूलाचार प्रदीप (आ. श्री सकलकीर्ति स्वामी जी)
29. योगामृत (भाग 1-2) (मुनि श्रीबाल
30. योगसार (भाग 1, 2) (मुनि श्री बालचंद्र जी)
31. रयणसार (आ. श्री कुंदकुंद स्वामी)
32. वसुऋद्धि
    - रत्नमाला (आ. श्री शिवकोटि स्वामी जी)
    - पूज्यपाद श्रावकाचार (आ. श्री पूज्यपाद जी)
    - लघु द्रव्य संग्रह (आ. श्री नेमीचंद्र स्वामी जी)
    - अर्हंत प्रवचनम् (आ. श्री प्रभाचंद्र स्वामी जी)
    - स्वरूप संबोधन (आ. श्री अकलंक देव जं
    - इष्टोपदेश (आ. श्री पूज्यपाद स्वामी जी)
    - वैराग्यमणि माला (आ. श्री विशाल कीर्ति
    - ज्ञानांकुश (आ. श्री योगीन्द्र देव)
33. सुभाषित रत्न संदोह (आ. श्री अमितगति स्वामी जी)
34. सिन्दूर प्रकरण (आ. श्री सोमदेव स्व
35. समाधि तंत्र (आ. श्री पूज्यपाद स्वामी जी)
36. समाधि सार (आ. श्री समंतभद्र स्वाम

प्रथमानुयोग साहित्य

1. अमरसेन चरित्र (कविवर माणिक्कराज जी)
2. आराधना कथा कोष (ब्र. श्री नेमीदत्त जी) (भाग 1-2-3)
3. करकण्डु चरित्र (मुनि श्री कनकामर जी)
4. कोटिभट श्रीपाल चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
5. गौतम स्वामी चारित्र (मण्डलाचार्य श्री धर्मचंद्र जी)
6. चारूदत्त चरित्र (ब्र. श्री नेमीदत्त जी)
7. चित्रसेन पद्मावती चरित्र (पं. पूर्णमल्ल जी)
8. चेलना चारित्र
9. चंद्रप्रभ चरित्र
10. चौबीसी पुराण
11. जिनदत्त चरित्र (कविवर ब्रह्मराय)
12. त्रिवेणी (संग्रह ग्रंथ)
13. देशभूषण कुलभूषण चरित्र
14. धर्मामृत (भाग 1-2) (श्री नयसेनाचार्य जी)
15. धन्यकुमार चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
16. नागकुमार चरित्र (आ. श्री मल्लिषेण जी)
17. नंगानंग कुमार चरित्र (श्रीमान् देवदत्त)
18. प्रभंजन चरित्र (कविवर ब्रह्मराय)
19. पाण्डव पुराण (श्री मदाचार्य शुभचंद्र देव)
20. पार्श्वनाथ पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
21. पुण्याश्रव कथा कोष (भाग 1-2) (श्री रामचंद्र मुमुक्षु)
22. पुराण सार संग्रह (भाग 1-2) (आ. श्री दामनंदी जी)
23. भरतेश वैभव (कवि रत्नाकर)
24. भद्रबाहु चरित्र
25. मल्लिनाथ पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
26. महीपाल चरित्र (कविवर श्री चारित्र भूषण)
27. महापुराण (भाग 1-2)
28. महावीर पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
29. मौनव्रत कथा (आ. श्री श्रीचंद्र स्वामी जी)
30. यशोधर चरित्र
31. रामचरित्र (भाग 1-2) (आ. श्री सोमदेव स्वामी)
32. रोहिणी व्रत कथा
33. व्रत कथा संग्रह
34. वरांग चरित्र (आ. श्री जटासिंह नंदी)
35. विमलनाथ पुराण (श्री ब्रह्मचारीश्वर कृष्णदास जी)
36. वीर वर्धमान चरित्र
37. श्रेणिक चरित्र
38. श्रीपाल चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
39. श्री जम्बूस्वामी जी चरित्र (श्री वीर कवि)
40. शांतिनाथ पुराण (भाग 1-2) (कवि असग जी)
41. सप्तव्यसन चरित्र (आ. श्री सोमकीर्ति भट्टारक)
42. सम्यक्त्व कौमुदी
43. सती मनोरमा
44. सीता चरित्र (श्री दयाचंद गोलीय)
45. सुरसुंदरी चरित्र
46. सुलोचना चरित्र
47. सुकुमाल चरित्र
48. सुशीला उपन्यास
49. सुदर्शन चरित्र (पं. गोपालदास बैरया)
50. सुभौम चरित्र
51. हनुमान चरित्र
52. क्षत्र चूड़ामणि (जीवंधर चरित्र)

संपादित हिंदी साहित्य

1. अरिष्ट निवारक त्रय विधान
   - नवग्रह विधान
   - वास्तु निवारण
   - मृत्युंजय (पं. आशाधर जी कृत)
2. श्री जिनसहस्त्रनाम एवं पंचपरमेष्ठी विधान
3. श्री जिनसहस्त्रानाम विधान (लघु) आदि एक नाम अनेक
4. शाश्वत शांतिनाथ ऋद्धि विधान
   - भक्तामर विधान (आ. मानतुंग स्वामी जी (मूल))
   - शांतिनाथ विधान (पं. ताराचंद्र जी)
   - सम्मेदशिखर विधान (पं. जवाहर दास जी)
5. कुरल काव्य (संत तिरुवल्लुवर)
6. तत्त्वोपदेश (छहढ़ाला) (पुं. प्रवर दौलतराम जी)
7. दिव्य लक्ष्य (संकलन-हिंदी पाठ, स्तुति आदि)
8. धर्म प्रश्नोत्तर (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
9. प्रश्नोत्तर श्रावकाचार (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
10. भक्तिसागर (चौबीसी चालीसा संग्रह)
11. विद्यानंद उवाच (आ. श्री विद्यानंद जी मुनिराज)
12. सुख का सागर (चौबीसी चालीसा)
13. संसार का अंत
14. स्वास्थ्य बोधामृत

गुरु पद विनयांजली साहित्य

1. अक्षर शिल्पी (मुनि शिवानंद)
2. पगवंदन (मुनि शिवानंद प्रशमानंद)
3. वसुनंदी प्रश्नोत्तरी (मुनि जिनानंद, ऐ. विज्ञान सागर)
4. दृष्टि दृश्यों के पार (आ. श्री वर्धस्वनंदनी, वर्चस्वनंदनी)
5. स्मृति पटल से भाग 1-2 (आ. श्री वर्धस्वनंदनी)
6. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी (ऐलक विज्ञान सागर)
7. गुरु आस्था (ऐलक विज्ञान सागर)
8. परिचय के गवाक्ष में (ऐलक विज्ञान सागर)
9. स्वर्णोदय (ऐलक विज्ञान सागर)
10. स्वर्ण जन्मजयंती महोत्सव (ऐलक विज्ञान सागर)
11. हस्ताक्षर (ऐलक विज्ञान सागर)
12. वसु सुबंध (महाकाव्य) (प्रो. डॉ. उदयचंद्र जी जैन)
13. समझाया रविन्दु न माना (सचिन जैन 'निकुंज')